RNI.No.: MPHIN/2013/49539

ISSN2395-7077

त्रैमासिक पत्रिका

अंतसमणि

(ज्ञानपथ का एक पथिक मैं, अंतस का हूं दिव्यप्रकाश)

भारतीय संस्कृति, साहित्य, समाज, अध्यात्म, नैतिक व मानवीय मूल्यों की सकारात्मक सोच की संवाहक-त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-12 अंक-04 | अक्टूबर-दिसंबर 2024 | मूल्य 30 रु. पृष्ठ 4+40=44

अंतसमणि की उड़ान
गुणवत्ता है पहचान

वसुधैव कुटुम्बकम

संरक्षक
डॉ. प्रतिभा गुर्जर

विशिष्ट परामर्शदाता एवं दिशादर्शक
डॉ. कुमुद निगम

प्रधान संपादक
रेकी मा. सरस्वती कामऋषि

सह संपादक
डी.भारती राव

प्रबंध संपादक
सूर्य प्रकाश जोशी

कला संयोजन
पी अंजली वर्मा

डिजिटल प्रबंधक
नितिन कामऋषि

विशेष संपादक और प्रकाशक
रेकी मा. सरस्वती कामऋषि

ऑफिस: ए/10 सुविधा विहार कॉलोनी,
एयरपोर्ट रोड, भोपाल - 462030 (म.प्र.)
www.antasmani.life
email: antasbpl@gmail.com
Mob: 9329540526

प्रिंटिंग
एमएसपी ऑफसेट,भोपाल

विशेष सहयोग:
कल्पवृक्षम्
वेलफेयर सोसायटी

MPHIN/2013/49539
ISSN 2395-7077

त्रैमासिक पत्रिका

अंतसमणि

(ज्ञानपथ का एक पथिक मैं, अंतस का हूं दिव्यप्रकाश)

भारतीय संस्कृति, साहित्य, समाज, अध्यात्म, नैतिक व मानवीय मूल्यों की सकारात्मक सोच की संवाहक-त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-12 अंक-03

इस अंक के आकर्षण

मूल्य 30 रू. पृष्ठ 4+40=44

1.	सुविचार		02
2.	अंतसमणि पत्रिका श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, सर्वोत्तम निधि		03
3.	संपादकीय	संपादक	04
4.	स्नेह की पाती स्नेहियों के नाम	प्रेरक पत्र शैली	05
5.	शिक्षा समाज की रीढ़ है और भाषा उसका चरित्र	सौ. कल्पवृक्षम्	06
6.	चरित्र निर्माण	सौ. हैप्पी थॉट्स	07
7.	जिंदगी के टेढ़े मेढ़े पथ (कविता)	लाल देवेंद्र श्रीवास्तव	08
8.	प्रवासी (कविता)	डॉ. प्रतिभा गुर्जर	08
9.	रीता मन (कहानी)	राधारानी चौहान 'मानवी'	09
10.	एक नई दिशा (कहानी)	राधा जर्नादन	14
11.	स्त्री विमर्श से जन्मी स्वावलम्बी महिलाएं (आलेख)	पूजा कश्यप	18
12.	सफलता का एक सूत्र आत्मविश्वास (आलेख)	रमेश चंद्र बादल	23
13.	संस्कृति का आधार पर्व उत्सव और त्यौहार (आलेख)	ज्योति चेड़े, पवई, मंबई	25
14.	धनतेरस नरक चतुर्दशी और दीपावली	पी. अंजलि वर्मा	29
15.	दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता की उपयोगिता (आलेख)	डॉ. शिवानी	32
16.	सोना तू मेरी है (बाल कहानी)	पद्मा चौगांवकर	35
17.	सबक	पवित्रा अग्रवाल हैदराबाद	37
18.	गाँधी जी के गुरू (प्रेरक प्रसंग)	चन्द्र प्रकाश जायसवाल	38
19.	अंतस की रसोई से	डी. भारती राव	39
20.	घरेलू नुस्खे		40
21.	हास-परिहास		41

स्वात्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक सरस्वती कामऋषि द्वारा खरे प्रिन्टर्स, चौकी तलैया रोड, भोपाल से मुद्रित एवं संकल्पम् 10, सुविध विहार कॉलोनी, एयरपोर्ट रोड, गांधी नगर, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।

Email :antasbpl@gmail.com
Mob.: 9329540526

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का पूर्ण दायित्व लेखक का है। अंतसमणि से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय होगा-सम्पादक

मनिषियों के सुविचार

मंजिलें बड़ी ही जिद्दी होती है और वे उन्हें ही मिलती है जो इसे पाने की जिद्द कर लेते हैं।

-डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम

वर्तमान ही सब कुछ है भविष्य की चिंता हमें कायर बना देती है और भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है।

-मुंशी प्रेमचंद

दुनिया में सबसे खुश वे लोग हैं जो यह जान चुके हैं कि दूसरों से किसी भी प्रकार की उम्मीद रखना व्यर्थ है।

-आचार्य चाणक्य

जो मनुष्य बिना किसी स्वार्थ के दूसरों के लिए कार्य करता है वह वास्तव में स्वयं का भला करता है।

-स्वामी रामकृष्ण परमहंस

शाश्वत् सत्य, किसी भी धर्म या विचार या पंथ या शास्त्र या दर्शन इन सबसे बड़ा है।

-महर्षि अरविंद

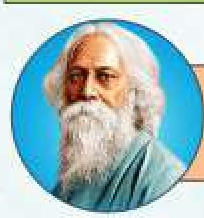

फूल भले ही अकेला होता है लेकिन कांटों से कभी ईर्ष्या नहीं करता है ।

-रविन्द्रनाथ टेगोर

किसी भी व्यक्ति के विचार ही सब कुछ है। वह जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है।

-महात्मा गाँधी

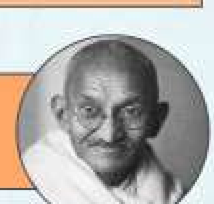

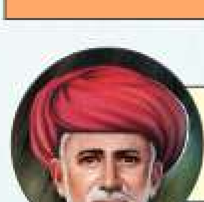

आप स्वयं पर विश्वास करें, आप दूसरों से बेहतर कर सकते हैं यही विश्वास आपके प्रति लोगों का नजरिया बदल सकता है।

-ज्योतिबा फुले

अंतसमणि पत्रिका श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, सर्वोत्तम निधि

जितना बांटे उतना बढ़े
आइये! पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, मानवीय चरित्र निर्माण के लिए अंतस की निधि घर-घर पहुँचाएं

बच्चे, भविष्य हैं परिवार, समाज और राष्ट्र के। भावी भारत के कर्णधार उन्हें तन, मन व विचारों से सशक्त बनाने के लिए और तीव्र मेधावान व्यक्तित्व निर्माण के लिए सुसाहित्य संजीवनी बूटी है। उन्हें दीजिए, चरित्र निर्माण की कुंजी एक उत्तम पुस्तक अंतसमणि।

युवाओं को जीवन की ऊहापोह से निकाल कर एक स्वस्थ्य चिंतन की ओर मोड़ने का दायित्व समाज का है। युवाओं की ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना हम सबका कर्तव्य है तो... दीजिए उन्हें सुसाहित्य पढ़ने के लिए अनमोल निधि और अंतसमणि....।

अंतसमणि पत्रिका लाया है नारी शक्ति को सशक्त बनाने की निधि, जो उनके अंतस में समाएगा और सकारात्मक ऊर्जा बनकर परिवार में छलकेगा...।

आज ! की जरूरत है कि हम एक सुदृढ़ संकल्पवान चरित्रवान नव समाज की नींव रखें ताकि गर्व से हर युवा, युवती, महिलाएँ बच्चे निडर होकर अपना व्यक्तित्व निर्माण कर सकें और भारतीयता और भारतीय होने का गौरव हर पल अनुभव करें। दीजिए उन्हें अंतसमणि पत्रिका.... पढ़ने के लिए।

अंतसमणि त्रैमासिक पत्रिका के विकास में सहयोगी बनें !!!

अंतसमणि के विकास के लिए यदि आप सहयोगी बनना चाहते हैं तो इस पुनीत कार्य में अवश्य सहयोगी बनें।

संपर्कः 9329540526

■ **व्यवस्थापक**

अंतसमणि पत्रिका के विस्तार के लिए www.antasmani.life साइट पर visit करें subscribe करके सहयोग प्रदान करें।

सम्पादकीय

अंतसमणि पत्रिका का यह अंक 2024 के अंतिम पायदान की प्रस्तुति है, अर्थात अक्टूबर से दिसंबर का यह प्रकाशन ''लोकतंत्र का महापर्व चुनाव'' शीर्षक से आप सब जागरूक पाठकों तक पहुंच रहा है; आशा है इस अंक में अपने विषय–वस्तु और जनप्रिय स्तंभों के साथ–साथ वर्ष भर के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक उथल–पुथल और देश की आर्थिक, शिक्षा, रोजगार, महंगाई जैसी चुनौतियों की झलक लिए, अपनी उपस्थिति, वर्तमान परिस्थितियों से जोड़ने की अपनी जिम्मेदारी मानते हुए; उन चुनौतियों की स्मृति पटल पर दृश्यगत होता हुआ अनुभव कर रहा है।

लोकतंत्र का महापर्व 'चुनाव' संपन्न हुए लगभग डेढ़–दो महीने का एक लंबा समय लेकर यह संपन्न हुआ। इस दौरान पूरा देश मानों सांस रोके इस त्यौहार को मनाता रहा, हर पल, हर घड़ी, तरह–तरह की खबरें आती चुनाव आयोग की भूमिका और अनेकानेक टिप्पणियां आती रहीं और विविध विसंगतियों के चलते चुनाव की का परिणाम सुस्वागतम रूप में आ गया लोगों ने राहत की सांस ली।

चुनाव परिणाम के साथ–साथ जनमानस की शांति भंग करने के लिए एक ऐसा रिजल्ट भी प्रकाशित हुआ जो दुर्भाग्यवश अपने निर्धारित समय से 10 दिन पहले ही अचानक घोषित कर दिया गया। इस घोषणा ने एक ऐसा भूचाल ला दिया कि जिसमें यह ज्ञात हुआ की Neet की यह प्रतिष्ठित प्रवेश परीक्षा में 'प्रश्न पत्र लीक' होने की बात सामने आई और सबसे बड़ी बात यह थी कि मनमानी ढंग से grace marks देकर और पेपर एक दिन पहले VIP बच्चों को पेपर रटवा दिया, अनेक छात्रों के 720–720 पूरे अंक पाकर सफल हुए। इन सब बातों को लेकर लाखों छात्रों ने सड़कों पर निकल कर प्रदर्शन किया और सरकार के प्रति अपना विरोध जताते हुए Neet की परीक्षा रद्द करने की मांग की। और कौंसिलिंग पर रोक लगे। मामला आनन–फानन में सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंच गया है अब देश के प्रतिभाशाली छात्रों का सपना अंधेरे में है और भविष्य अंधकार में, बच्चे आखिर जाएं तो कहां जाएं। सचमुच आज देश, जाहिर है, कि लाखों बच्चों व अनेक अभिभावकों के साथ है। बच्चों को न्याय मिले यही सब कामना करते हैं।

अभी छात्रों के व अभिभावकों की आंखों के आंसू ठीक से सूखे भी नहीं थे कि एक और घटना ने देश भर को स्तब्ध कर दिया एक और रोते बिलखते लोगों की तस्वीरें लगातार आने लगीं। दरअसल हृदय विदारक घटना घटी 4/7/2024 को उत्तर प्रदेश के हाथरस में देश में एक से बढ़कर एक बाबाओं का ऐसा प्राकट्य हो रहा है जिनके बारे में यह पता चलता है कि यह लोग 20–25 सालों से अपनी जड़े जमाकर करोड़ों की संपत्ति बनाकर बैठे हैं यह सब ऐसी घटना घटने के बाद पता चलता है कि बाबा के तार कहां–कहां तक जुड़े हैं। दरअसल सत्संग का आयोजन हुआ था ढाई लाख जन इकट्ठा थे और चरण धूली पाने के लिए भगदड़ मची और लगभग 120 लोग कुचले गए और मारे गए। सैकड़ों घायल हुए। अविश्वसनीय घटना देश की संभ्रांत जनमानस का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती है।

वर्ष की ये परिस्थितियां इस समय देश के सम्मुख बड़ी चुनौतियों के रूप में खड़ी हैं। इन चुनौतियों का समाधान पक्ष–विपक्ष सरकार दोनों का सामूहिक दायित्व है। आशा है शांत चित्त से समता का भाव हृदय में धारण कर सरकार को सकारात्मक समाधान अविलम्ब करना होगा।

❖❖❖

स्नेह की पाती स्नेहियों के नाम

स्नेही पाठकों

आज सबसे अधिक जरूरत इस बात की है कि हम अपने युवा धन की सुरक्षा की ओर विशेष जागरूकता रखें। अब समय चैतन्य रहने का है; जब विकास की गति रफ्तार पकड़ती है तो जन जीवन हिचकोले खाना स्वाभाविक है। समाज की सबसे बड़ी दौलत यदि कुछ अथवा कोई है तो वह है; आम जनता जो किसी भी भूखंड को राष्ट्र अथवा देश बनाने की ताकत रखता है। आम जनता ही देश की परंपराओं, आदर्शों व मूल्यों की धरोहर को संभाले रखती है। इस बात का महत्व इसलिए भी है कि लोकतंत्र का आधार जनता ही होती है।

21वीं सदी का भारत युवा भारत है। हमारे मध्यम वर्गीय परिवारों में सबसे ज्यादा संघर्ष और चुनौतियां हैं; जिनके चलते तनाव और निराशा जैसी अति मानसिक समस्याओं का सामना भी उन्हें करना पड़ता है। यह वर्ग आत्म सम्मान और स्वाभिमान को कायम रखने के लिए निरंतर प्रयास करता है। यहां युवाओं के सामने आने वाली समस्याएं जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, चिकित्सा को लेकर कठिनाइयां उपजती हैं। उन को लेकर युवाओं में भविष्य के प्रति आशंकाएं उत्पन्न होती हैं। शिक्षा के बदलते स्वरूप ने प्रतिभाओं को निराश किया है आर्थिक असमानता भी उन्हें कमतरी का एहसास कराती हैं जिससे डिप्रेशन का शिकार युवा होते हैं।

मोबाइल पर अवांछित वर्जनिय खेलों का खुला विज्ञापनों का बाजार सभ्य समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिए यह बात बिल्कुल सत्य है कि समाज को युवा धन की सुरक्षा के प्रति जागरूक रहना होगा। Injustice का दंश युवा आखिर कब तक झेलते रहेंगे।

देश के युवकों से यही अपील है कि जीवन में चाहे जितने संघर्ष और चुनौतियां क्यों ना हो हमें डटकर उनका मुकाबला करना चाहिए उनसे हार नहीं मानना है। युवा की शक्ति के आगे कोई मुश्किल टिक नहीं सकती है युवा ही हर युग में साहस का प्रतीक बने हैं। युवाओं के हर कदम निडर होकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ना चाहिए।

जीवन की मुस्कान

शिक्षा समाज की रीढ़ है और भाषा उसका चरित्र

❒ : सौ. कल्पवृक्षम्

राष्ट्र–भाषा हिन्दी आज भी एक राष्ट्र भाषा के रूप में संविधान में स्थान नहीं पा सकी है। यह एक स्वतंत्र लोकतंत्रात्मक गणराज्य के विषय में गंभीर है। इन पर विवेचना चिंतन, मनन और स्वीकारोक्ति पूर्ण मंथन, सक्षम, सार्थक प्रयास किया जाना चाहिए। जन जागृति की आवश्यकता है। भारतीय जन–मानस जब अपने हृदय प्रदेश में भाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित कर उसे स्नेह, करूणा, वात्सल्य, ममता व संवेदनाओं को सींचकर उसे अपना बनाएगा तब ही पूरा भारत हिन्दी को माँ कह सकेगा और धरती माँ के भावनाओं को अपने सपूतों के लिए इसे अभिव्यक्ति दे सकेगा। 72 वर्ष अब भारतवर्ष के आजादी के हो गए हैं, ऐसे में एक सशक्त, सामर्थ्यवान एक राष्ट्र, एक भाषा की ओर ध्यान देकर पूरे भारतवर्ष की स्थाई भाषा के रूप में उसे सम्मान मिलना चाहिए। इच्छा शक्ति और एकता के बलबूते यह संभव होगा।

भाषा में वह शक्ति है जो एक के हृदय से निकलकर दूसरे के हृदय तक पहुंचती है। ऐसे में देश के 135 करोड़ जनमानस को संगठित कर, एक सूत्र में बांधने का अर्थ भाषा हिन्दी ही कर पाएगी। हिन्दी, अति आत्मीय, सुगढ़, सुसंस्कृत, भावपूर्ण और पूर्ण मनोवैज्ञानिक राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, वैज्ञानिक सार–संदर्भों में पूर्ण सक्षम है। समुद्र की अथाह लहरों का शब्द विन्यास, वाक्य विन्यास हमें वाणी में प्रवीण बनाता है। भाषा पर अधिकार वाणी का संयम हमें समस्याओं का समाधान भी देता है। हमारी शिक्षा पद्धति में यह बात शामिल होना चाहिए कि हर बच्चा अपनी प्रादेशिक भाषा, मराठी, तेलुगु, गुजराती आदि–आदि के साथ हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भी पढ़ सके और इस पर वह भाषा में प्रवीण बनकर अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफलता पा सके। शिक्षा समाज की रीढ़ है और भाषा उसका चरित्र। दोनों ही बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अति अनिवार्य है।

संविधान निर्माताओं ने हिन्दी भाषा के भविष्य के लिए जो प्रावधान प्रस्तुत किए हैं वे आज के भारत के संदर्भ में विचार करके ही सम्मिलित किए गए हैं। आजादी के समय मात्र 15 वर्षों के लिए अंग्रेजी भाषा को सम्पर्क भाषा के रूप में स्थान दिया गया था और संसद के माध्यम से इसे हटाकर हिन्दी को स्थान देने के लिए पर्याप्त व्यवस्था की थी। अधिकारिक भाषा बड़ी जद्दोजहद के बाद ही बन पायी थी। लगभग 22 भाषायें 'भाषा' का पद प्राप्त किए हुए हैं। प्रदेश अपनी प्रादेशिक भाषाओं में प्रशासकीय कार्यकलाप करने में स्वतंत्र है। यह भी नियम है कि हर भाषा का जानकार अपनी समस्या के समाधान के लिए अपनी मातृभाषा में आवेदन प्रस्तुत कर सकेगा और उसे कोई भी संस्थान, प्रशासनिक विभाग स्वीकृत करेगा। भाषाओं के सम्मान हेतु यह अति महत्वपूर्ण हो जाता है कि हर भाषा जो भारत की है उन्हें सम्मान दिया जा सके।

भाषायी विकास से बालकों की रचनात्मकता, गुणात्मकता, सृजनात्मकता और उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति की प्रतिभा का विकास होता है। जो बच्चों को हर दिशा में आगे बढ़ने में सहायक होगा। भाषा के सौन्दर्य और हृदयस्पर्शी गुण ही हमें एकजुट करने में सहायक भूमिका निभाते हैं तो क्यों ना हम सब भाषायी कौशल का अपने में विकास कर जीवन को मुस्कान दें और खिलकर मुस्कुराकर एक स्वर में कहें हिन्दी है हम वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा। हिन्दी ही हिन्दुस्तान में 'सामाजिक चरित्र' निर्माण करेगा।

❖❖❖

चरित्र निर्माण

□ : सौ. हैप्पी थॉट्स

विश्व स्तर के विचारकों ने अपने–अपने अनुभवों के आधार पर वही बातें निष्पादित की हैं जिनसे मानव मात्र का जीवन इस धरती पर कायम रह सके। विचार ही तो है जो अनेकानेक मानवीय मस्तिष्कों से निकलकर राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचलित हैं। यदि इन सभी विचारों को संचित कर एक सार निकालें तो यह स्पष्ट होता है कि यदि मनुष्य के जीवन से स्वास्थ्य निकल जाए तो कोई विशेष हानि नहीं, यदि धन चला जाए तो कुछ, मात्रा में हानि होगी किन्तु यदि !!! मनुष्य अपना चरित्र खो दे तो समझो उसका सबकुछ चला जाता है। इससे यह तो प्रमाणित ही है कि 'चरित्र ही जीवन का धन है।'

चरित्र का निर्माण शिशु अवस्था से हो जाता है। उसका चरित्र निर्माण गर्भावस्था से ही आरंभ होता है यह बात बहुत कम लोग समझ पाते हैं। शालेय शिक्षा में अनुशासन के रूप में चरित्र का निर्माण होता है यह व्यवस्था पाठशालाओं में विशेष रूप से होना ही चाहिए। क्योंकि बालक अपने परिवार के साथ कम परंतु शाला में अधिक समय रहता है। इसलिए शाला, परिवार, समाज तीनों ही बराबर जिम्मेदार होते हैं। बालक के चरित्र निर्माण के लिए। परिवार को प्रथम पाठशाला की संज्ञा दी गई है। बालक के माता–पिता भाई–बहिन, दादा–दादी, सारे परिजनों के आचरण व्यवहार को देखकर बच्चे सीखते हैं, इसलिए अच्छी आदतों के संस्कार उन्हें बालपन में ही सिखाया जाना चाहिए। बड़ी ही सतर्कता से अच्छी आदतों का पालन सीखाकर आत्म अनुशासन का विकास करना चाहिए। आत्मानुशासन ही चरित्र निर्माण के लिए महत्वपूर्ण प्रथम कदम होगा। आइये। हम सब मिलकर सामाजिक चरित्र निर्माण की दिशा में सार्थक, कारगर प्रयास में जुट जाएँ और एक सुदृढ़ व्यवस्था करके ही दम लें।

सामाजिक चरित्र निर्माण हो या व्यक्तिगत चरित्र निर्माण हो इन सबकी जननी है 'परिवार'। परिवार ही एक ऐसी संस्था है जिसमें चरित्र निर्माण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य संपादित किया जा सकता है। बशर्ते परिवार अपना परिजन ही इस संकेत को समझ पायें। आज के वातावरण के अप्रतिम नकारात्मकता को देखते हुए रूह कांप उठती है और आंखों के सामने 'चरित्र' शब्द का महत्व तिरने लगता है। चरित्रहीनता की पराकाष्ठा आए दिन हम अपनी जिन्दगी में अनुभव करते हैं तब भी हम सबक नहीं लेते। कोई घटना घट जाए तो चीख चिल्लाहट के रूप में बच्चों के मानसिक शक्ति क्षीण होती है और नतीजा कुछ नहीं निकलता है। परिवार अगर भारतीय संस्कृति के अनुपालन से अपने परिवार संप्रदाय के बीच समरसता और कड़ी नजर बनाए रखे तो समाज एक हद तक कलंकित होने से बच जाएगा और वृद्धाश्रम और अनाथालयों जैसे विभीषिकाओं से भी मुक्त होगा।

आइये! हम सब व्यक्तिशः चरित्र निर्माण कर, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक पक्षों को सबल बनाकर क्यों ना सामाजिक चरित्र निर्माण कर सम्मानित जीवन जी लें।

❖❖❖

जिंदगी के टेढ़े मेढ़े पथ

❐ : लाल देवेंद्र श्रीवास्तव

वक्त के थपेड़ों से घबराता हूं
कभी ठोकर इतनी जोर से लगती है
गिर भी पड़ता हूं पर डरता नहीं हूं
मुश्किलों का सामना करता हूं
संभल कर आगे बढ़ता हूं.............
मानता हूं कि जब वक्त अच्छा ना चल रहा हो
तो खराब दौर में पराए तो पराए हैं
अपने भी साथ चलने को तैयार नहीं होते हैं
क्रोध तो आता है, खुद में जब्त कर जाता हूं
कदापि हिम्मत ना हो तो
दुगने उत्साह से चल पड़ता हूं..........
जिंदगी तुमसे अच्छे कर्म करने का
मैं वादा करता हूं
कांटों का ताज मुझे मिला है
पर सोचता हूं कि कांटों के साथ
गुलाब भी खिला होता है
दु:खों के पहाड़ मेरे लक्ष्य में विघ्न करेंगे
मुझे खुद पर पूर्ण विश्वास है
जिंदगी को खूबसूरत बनाने का
मेरे द्वारा किए जा रहे प्रयास से
निश्चित ही मैं बेहतर करूंगा
इसी उम्मीद में अकेले ही
मैं निकल पड़ता हूं.........
माना कि सत्य मौन है
लेकिन सत्य अटल है
अंततः सत्य सफल होता है
सत्य का अनुगमन कर
जिंदगी को अब तक जिया है
भले ही सफलता का अमृत रस
अभी तक नहीं पिया है
वक्त ने मेरा साथ नहीं दिया है
अनीति के सरल सुगम पथ पर
विजय श्री का न करूंगा आह्वान
मुझे नहीं चाहिए ऐसा सम्मान
सत्य के टेढ़े मढ़े पर्वत पर
मैं आनंद मगन होकर चढ़ता हूं....।

प्रवासी

❐: डॉ. प्रतिभा गुर्जर

दूरी चाहे कितनी भी हो, वे चल पड़ते हैं....
नंगे पांव, तपती धूप में, अपनी गठरी सर पर रखकर
साथ में ना पीने को पानी, ना खाने को खाना
ना रूकने, ठहरने का ठिकाना।
आए थे, पेट की भूख मिटाने, रहने का आशियाना ढूँढने.....
जी तोड़ मेहनत की, पर अचानक आया
क्रूर निर्मम राक्षस, हर किसी के आशियाने पर
हुआ आक्रमण...
गूंज उठा, कोरोना क्रंदन, देश–विदेश में हर
कोने–कोने किया तहस–नहस।
तभी तबाही मचाता, तूफानी हवाओं के साथ
आया 'अम्फान' और 'निसर्ग', ऊँची–ऊँची लहरें
तेज हवा का शोर, उखड़–उखड़ कर गिरने लगे पेड़
भयावह बारिश..., सैकड़ों घर उजड़े, मची तबाही
पल में चारों ओर त्राहि–त्राहि, सब कुछ सहते, झेलते,
निरंतर निर्भय वे चलते रहे...
बच्चों का हाथ थामे, अनागत की ओर वे चलते रहे....

रीता मन

: राधारानी चौहान 'मानवी'

मानसी का आज व्रत है, नौ दिनों (नवदुर्गा) में शक्ति की आराधना कर आन्तरिक शक्ति को संचित करने का सतत प्रयत्न कर रही है। वह एक उच्च संस्कारित महिला है। आध्यात्मिक विचारों से तपी हुई, सजग तार्किक दृष्टि से धर्म को मानने वाली एक आधुनिक सक्षम नारी।

मानसी के पति सुधाकर वर्मा एक उच्च पदाधिकारी हैं, लेकिन धर्म को अपने बचपन के संस्कारों से जोड़े हुए, अक्षम मनोबल से ग्रसित।

पच्चीस वर्ष पहले तो मानसी से उनका विवाह हुआ था। दोनों का जीवन साधारण चल रहा था। मानसी का बचपन आधुनिक संस्कारों में पला था, पिता राजनीति में थे, स्वतंत्रता आंदोलन में भाग ले चुके थे। आध्यात्म के ज्ञाता, अनुशासन का प्रभाव पूरे परिवार पर वरीयता लिये हुए थे। मानसी शहर की रहने वाली स्वच्छन्द एवं स्वतंत्र विचारों की लड़की थी। वह उच्च शिक्षा प्राप्त, सात भाइयों की सबसे छोटी बहन, भरपूर स्नेह, लाड़–प्यार से पली थी।

सुधाकर वर्मा एक साधारण गांव के मध्यवर्गीय परिवार में जन्में परेशानियों के बीच, संयुक्त परिवार के बीच किसी तरह ग्रेजुएशन किया। नियति का लेख, मर्यादाओं में बंधी मानसी सुधाकर की पत्नी बना दी गई। मानसी ज्ञान को महत्व देती, विचारों में खुलापन, बौद्धिकता से पूर्ण, पति को सर्वस्व मान जीवन बिताने लगी।

समय बीतने लगा, मानसी शिक्षित अवश्य थी, परन्तु ससुराल की रूढ़िवादी परंपराओं, अंधविश्वासों के आगे अपना पहला बेटा खो बैठी थी। उसके बाद पास के एक बड़े शहर में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हो गई, अंतराल में तीन बेटियों का पालन– पोषण उसने बेटों से बढ़कर किया। तीनों बेटियों की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय में दिलाई। कहीं भी किसी भी क्षेत्र में बेटियों को आगे बढ़ाना मानसी का आत्मिक प्रयास रहता। बेटियां धीरे–धीरे, शिक्षा, नृत्य, वाद–विवाद प्रतियोगिता, तैराकी, खेलकूद और भारतीय संस्कारों के साथ बड़ी होने लगीं।

सुधाकर ह्रदय से जानते थे कि मानसी जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में सक्षम है। इसीलिये शायद गृहस्थ जीवन के गंभीर उत्तरदायित्वों के प्रति वे निश्चिंत हो गये थे। सुधाकर का झुकाव अपने बड़े भाई–भाभी उनके बच्चों की ओर अधिक था। उनकी बेटियां युवा हो चुकी थी। शादी–ब्याह की जिम्मेदारी, पढ़ाई–लिखाई का भार, घर के फैसले सुधाकर अपने कंधों पर पूरी आत्मीयत से लेते। समय–बेसयम मानसी और छोटे–छोटे बच्चों को छोड़ वे अपने भाई–भतीजों के उत्तरदायित्वों को निभाने अपने घर चले जाते।

बड़े भाई अपनी पत्नी के देहांत के बाद अकेले हो गये थे। सुधाकर भतीजे भतीजियों के लिए वर आदि की तलाश में निकल जाते वे अच्छी तरह जानते थे कि मानसी व्याख्याता है बेटियों की देखभाल, शिक्षा, पालन– पोषण सभी की चिंता पूरी निष्ठा के साथ निभा रही है।

कभी–कभी जब मानसी अकेली होती, उसका अन्तर्मन कहीं किसी सच्चे प्यार को ढूंढता रहता, वह अपने कर्तव्यों को सच्चे मन से निभाती। अपने पति के

सारे काम करती, नौकरी जाती, सामाजिक रिश्तों को बखूबी निभाती, उसकी मिलन सरिता से प्रबुद्ध लोग शीघ्र ही सच्चे मित्र बन जाते। वह साहित्य–सृजन में लीन रहने लगी। मन में खाली कोनों को, कविताओं, कहानियों, लेख आदि के शब्द–भंडारों से भरने लगी। परिश्रम करना, सत्य की राह चलना, उसके जीवन का अंग बन चुका था। वह देश की कई साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ी थी, उसे कई सम्मानों और उपलब्धियों से सम्मेलनों में अंलकृत भी किया जा चुका था।

जीवन के पच्चीस वर्ष घोर परिश्रम, लगन, बच्चों के पालन–पोषण में बीतते चले गये। मानसी मात्र एक कर्तव्य परायणता की मूर्ति ही बनी रह गई। शासकीय मकान, पूर्ण लगाव, आत्मीयता, स्नेह प्यार का सुखद घरौंदा न बन सका।

पल–पल दिन रात में बदलते गये, कभी कोई छोटी सी खुशी मिल जाती, लगता, मानसी की उसी दिन दिवाली हो। मिलने वाला हर खुशी का पल उसका त्यौहार हो जाता।

सुधाकर का स्वभाव गर्म था, अच्छे मूड में बच्चों को प्यार करते, बातें करते, पता ही न चलता किस बात पर गुस्सा दिखाने लगें, छोटी–छोटी बात पर, मानसी पर, तो कभी बच्चों पर बरस पड़ते, अपशब्द, क्रोध, कटुवाणी दुर्व्यवहारों के आधात मानसी के संवेदनशील मन को समय–बेसमय आहत कर देते। कभी–कभी प्रत्युत्तर में, स्पष्टीकरण में, शिक्षक की भाषा में मानसी कुछ जवाब दे देती और कभी मौन को अपना आलम्बन बना लेती। वह ईश्वर से अन्तरंग प्रार्थना करती रही, सोचती कभी तो मेरा जीवन साथी मेरे सच्चे त्याग, प्रेमनिष्ठा को पहचानेगा। कभी तो अपने उत्तरदायित्वों को समझ पायेंगे। इन्हीं विचारों के तानों बानों में उलझती मानसी अपने घरौंदे को सजाती संवारती रही।

उसे कर्म, धर्म, आचरण, चरित्र और कर्मनिष्ठा की विशेष चिंता रहती। कोई कितना भी उसके साथ दुर्व्यवहार कर जाये, वह ईश्वर के हाथों निर्णय को सौंप देती, उसके ससुराल में छोटे–बड़ों के साथ सौहार्दपूर्ण कर्तव्य किये परन्तु उसे वह यश प्राप्त न हो सका। जो उसे मिलना चाहिये था। मानसी अपनी सास ननदों के साथ अपनी माँ और बड़ी जैसे ही व्यवहार करती उसकी सास और ननदें भी उसके व्यवहार से खुश थीं। मानसी ने अपने जेठ के बच्चों का विवाह जिठानी न होने के कारण माँ बनकर पूरी निष्ठा के साथ किया। आज भी मंझली जेठानी उनके चारों बच्चे मानसी को इज्जत देते हैं।

परन्तु सुधाकर का लगाव अपने बड़े भाई तथा उनके बेटे–बहू पर, भतीजी और दामादों पर ज्यादा था। वे परिवार के दूसरे रिश्तों को इन लोगों के आगे समझते क्योंकि सुधाकर के पिता का देहांत उनके ग्रेजुयेशन करते समय हो गया विधवा बूढ़ी मां सुधाकर का आर्थिक सम्बल तो बनी, पर संयुक्त परिवार होने के कारण सुधाकर की जिम्मेदारियां बढ़ गई थी। बड़े भाई ने सुधाकर को कहीं बाहर नौकरी करने नहीं दिया, क्योंकि चार जवान बेटियों का दायित्व, वर की तलाश, दो बेटों की सबकी देखभाल सुधाकर के कंधों पर थी। उन्हें पंगु बनाकर रख दिया गया, बेरोजगार होने के कारण बड़ों की आज्ञा मानना सुधाकर का नैतिक कर्तव्य बन गया था। व्याह कर आई उसने एक दिन में सारा स्वरूप समझ लिया था, वह किसी पर बोझ बनना नहीं चाहती थी, उसे स्कूलों में टीचिंग के लिए एप्लीकेशन दी, मानसी को एक समय का भोजन भी भारी लग रहा था, उसकी बड़ी बहन प्राचार्या थी बड़े भाई इंजीनियर थे, वे हर महीने मानसी को रूपये भेजते और विश्वस्त होते कि सुधाकर की नौकरी मिल ही जायेगी।

कुछ ही दिनों में मानसी शहर में व्याख्याता हो गई, और अपनी जीवन नैया स्वयं ही चलाने लगी उसने सुधाकर को कभी महसूस नहीं होने दिया कि वह बेरोजगार है। मायके ससुराल सभी जगह पति का मान प्रतिष्ठा बनाये रखी, कभी–कभी सुधाकर के निराश होने पर वह बोल पड़ती देखिये, मैं आपकी पत्नी ही नहीं, एक दोस्त जीवन साथी हूँ, आप परेशान न हो। आखिर कार विवाह के पांच वर्ष बाद सुधाकर एक शासकीय उच्च पद मिल ही गया, चाहें इसे मानसी का भाग्य कहें या बच्चों का या स्वयं सुधाकर का। मानसी चाहती थी कि सुधाकर अब तो अपनी पत्नी बच्चों के साथ बंधकर स्नेहपूर्वक रहे, वह हर संभव प्रयत्न करती लेकिन न जाने कैसे विश्वास बनते–बनते टूटने लगता, प्यार होने से पहले ही बिखर जाता। मानसी को पति–पत्नी के रिश्ते मात्र विवशता से

बंधे हुये हैं। दोनों ही शायद अपने को सही समझ रहे हो, सुधाकर मानसी को स्वार्थपरता की कसौटी पर खरा नहीं पाता, वह सौन्दर्य प्रेमी था तथा व्यवहारों में बनावटीपन लिये रहता, परन्तु मानसी यथार्थ के धरातल में होकर जीना चाहती थी।

मानसी जीवन के महान मूल्यों के प्रति सजग हो अपनी बेटियों की शिक्षा संस्कार के बीज समय–समय पर रोपति रहती, उन्हें ढांढस बंधाती, बहादुरी का पाठ जीवन जीने की सकारात्मकता के महत्व को बताती, उसकी बड़ी बेटी ने बी.ई. कर बाहर ट्रेनिंग पर जाने का निश्चय किया मानसी ने उसके विश्वास को मजबूत किया। एक कर्मयोगी की भांति मानसी का जीवन बीतता जा रहा था। नियति को शायद सत्यमार्ग की और परीक्षा लेनी थी, चार वर्षों से तो उसके पारिवारिक जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगे।

सुधाकर के संस्कार ग्रामीण स्वरूप से प्रभावित थे, कुछ मान्यताओं, अंधविश्वासों, कमजोर मनोबल, अशिक्षित परिवार के बड़े लोगों के चक्कर में पड़कर वे कुछ अधिक ही अपने बड़े भाई के पास आने–जाने लगे, घर में अशिक्षित बहु का पूजा–पाठ तंत्र–मंत्र के माध्यम से शक्ति आह्वान करते, खूब जोरों से ढोल बजते, घर के आस–पड़ोस के लोग बैठते शक्ति कभी किसी की जवान बेटी के चरित्र पर संदेह व्यक्त करती, कभी भविष्यवाणी करती, कभी श्राप देती, कभी धमकाती, कभी डराती।

सुधाकर मानसिक रूप से बंधता गया वह बड़े भाई का अनन्य भक्त, आदर श्रद्धा का पात्र बन गया। वह इन अतार्किक, अज्ञानता, भय मानसिकता दुर्बलताओं के कारण अपने पत्नी बच्चों से दूर होता चला गया।

सप्ताह में एक दिन पूजा में शामिल होने के लिये बिना बताये चले जाते, और कभी ऑफिस से ही बच्चों को फोन करके बताते, शाम को घर आऊंगा, कल वापस आऊंगा।

उसे अपने घर अपना न लगता, पत्नी राह देखती रहती, आस–पड़ोस के लोग शाम के समय अपने–अपने घर लौटते, पत्नियां खुश होती, बच्चे खुश होते। मानसी की उदासी दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी, वह फ्लॅट में रहने के कारण इन बातों को बहुत करीब से अनुभव करती। उसका मन कहीं से टूटता जा रहा था, परन्तु अपनी बेटियों को खुश रखने का ऊपरी प्रयास भरसक करती। एक बार सुधाकर बोले– मानसी। मैं घर जाऊंगा अभी भैया बीमार है, शाम तक आ जाऊंगा, पर सुधाकर बीस दिन गायब रहा, वहां जाने पर पता चला कि उनका पूरा परिवार सुधाकर सहित कहीं तीर्थ स्थल पर घूमने गये हैं।

मानसी धीरे–धीरे बिखरती जा रही थी, वह अपने दुःख को अंतर की धरती पर दबाये, सांसारिक दायित्वों को निभाते जा रही थी। बच्चे रातों को परीक्षाओं में मन लगा कर न पढ़ पाते, परिणामस्वरूप रिजल्ट अच्छे न आते, पारिवारिक घुटन पत्नी बच्चे अंदर ही अंदर अनुभव कर रहे थे। परन्तु सुधाकर को इसकी कोई चिंता नहीं थी। उसकी क्रियाकलापों को देखकर ऐसा लगता कि वह घर परिवार के प्रति मोह नहीं रखता। मानसी बच्चों के भविष्य को सुधारने में लगी सब कुछ सहती जा रही थी, वह सक्षम थी, आत्मनिर्भर थी, चाहती तो एक पल में रिश्तों के पवित्र डोरी को तोड़ सकती थी, परन्तु उसे कल के सुखद भविष्य की आशाओं के साथ संभाले रखना बड़ा कठिन लग रहा था, सुधार के दमनात्मक शासन कभी–कभी मानसी बच्चों को लेकर उस पूजा में शामिल हुई, पति के बाध्य करने पर शक्ति से कुछ पूछा भी, कई बातें झूठी निकली। सुधाकर के बड़ी बेटी की शिक्षा के लिए जो कहा वह सच न निकला, यहां तक कि उसके अबोध निर्मल चरित्र, पर संदेह की बात कमरे में बैठे कई लोगों के सामने कहीं, जो कतई सत्य न था। मंझली बेटी को बोर्ड में 70 प्रतिशत आने का आश्वासन दिया वह भी सच न हुआ, घर पर कलह और तनाव का वातावरण न हो इसलिये मानसी एक साल तक कभी–कभी बच्चों को लेकर अपने पति के साथ गई। दिन में नौकरी करना, शाम को पूरा परिवार का दो घंटे ट्रेन में सफर करना, रातों के पूजा तंत्र–मंत्र चलना, फिर अपने घर वापस लौटना, दूसरे दिन बच्चों को स्कूल जाना, स्वयं को कॉलेज पढ़ाने जाना, वे पारिवारिक स्तर को कम करते जा रहे थे।

मानसी का मन ही मन सत्य– असत्य का मंथन करती, धर्म–अधर्म, स्वार्थ मान–प्रतिष्ठा का झूठा दिखावा उसकी समझ में आने लगा था मानसी को ससुराल के

दूसरे लोगों से पता लगा कि रात में पूजा होती है और दिन में उसी बहू को पीटा जाता है। उसने कई बार आत्महत्या का प्रयास भी किया, सुधाकर के पास वहां से दो तीन बार फोन भी आया कि जल्दी आओ बहू ने जहर खा लिया, परन्तु सच क्या है किसी को पता नहीं। अशिक्षित बहू, ससुर, पति, देवर, ननद के शासन तले प्रताड़ित की जाती उसे किसी रिश्तेदारी में आने जाने की इजाजत नहीं थी।

समय बीतता गया, मानसी ईश्वर पर दृढ़ आस्था बनाये हुये थी वह जानती थी कि मेरी आत्मा की पवित्रता–परमात्मा अच्छी तरह जानता है, वह मेरे बच्चों और पति को हर बलाओं से बचायेगा। सुधाकर अपने मन की बात कभी भी मानसी को न बताते, दूसरे लोगों से जब पता चलता, उसके मन को आघात पहुंचता। मानसी ने अपने कई अनन्य मित्रों से इस समस्या का समाधान चाहा कई मंदिरों में पूजा अर्चना की, कई विशेषज्ञों से संपर्क किया, सभी का एक ही जवाब था कि सुधाकर का वशीकरण किया गया है, सुनकर मानसी का दिल दहल जाता, वह समाधान के सारे प्रयास करती, उसने अपने मायके में भी किसी को परेशान नहीं किया, ईश्वर को पल–पल अपनी पीड़ा बयां करती, उसे विश्वास था कि जीत सत्य की होगी, असत्य एक न एक दिन हारेगा, अंधविश्वास की राह वह कई चलने को तैयार न थी, परन्तु खुलकर विरोध न कर पाती। क्योंकि बच्चों की शिक्षा पर कुप्रभाव तो पड़ ही रहा था और बर्बादी वह नहीं चाहती थी। जब कभी सुधाकर थोड़ा सा भी अच्छा बोलते वह ईश्वर को धन्यवाद देती, आशा की किरण दिखने लगती पर जहां पूर्णिमा या अमावस्या आती सुधाकर एकदम रंग बदलने लगता बड़ी–बड़ी आंखें करके बात करता, मरने की धमकी देता।

मानसी के प्रति लगाव तो सुधाकर के व्यवहारों में दिखता ही नहीं था। इस बात को वह अच्छी तरह समझ रही थी। फिर भी वह अपने पति को निर्दोष मानकर वह आत्मीय प्यार लुटाये जा रही थी। सुधाकर घर की छोटी–छोटी बातों पर बच्चों को कोसते, देखना तुम लोग कटोरा लेकर भीख मांगोगे। तुम्हारी पढ़ाई बर्बाद हो जायेगी, जिन्दगी बर्बाद हो गई है तुम लोगों के साथ। मुझे तो वही चैन मिलता है भाई के पास, शांति मिलती है। मैं तो यहां फंसा पड़ा हूं आदि–आदि। मानसी ऐसी बातों को सुनती, बच्चे सिसक जाते बच्चों के उदास चेहरों को देख मानसी उन्हें समझाती देखों बेटा, पापा का व्यवहार नार्मल नहीं है, वे मन से तुम्हें बुरा नहीं कह रहे हैं। तुम तो बस उस परम सत्ता पर विश्वास रखो तुम्हारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं, ये कठिनाइयों के दिन सदा रहने वाले नहीं। ईश्वर हमारी परीक्षा ले रहा है, हमें भी कसौटी पर खरा उतरकर सच्चाई को जीतकर दिखाना है, तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो, मैंने तो किसी तरह की कमी नहीं रखी है, केवल अपने भविष्य को देखो, लक्ष्य पर पहुंचना ही तुम सबका उद्‌देश्य होना चाहिये। ईश्वर दयालु है, दुःख सदा साथ नहीं रहता, तुम्हें तो हमसे ज्यादा अच्छा करके दिखाना है, अपना मनोबल कमजोर मत होने दो, आत्मविश्वास का साथ कभी मत छोड़ना, उस महान सत्ता पर विश्वास करो, वह हम सबका पिता है। सब कुछ ठीक हो जायेगा। कभी–कभी बड़ी बेटी अनन्या चिन्तित हो उठती, उसके कई पेपर्स, इन घरेलू परेशानियों के चलते रूक गये थे। मानसी हिम्मत देती, किसी तरह से घिसट–घिसट के अनन्या की बी.ई. (कम्प्यूटर) हो रहा था। कई बार तो पिता के ऐसे व्यवहारों के कारण आत्महत्या की भी कोशिश की। बेटियों के प्रति पिता का व्यवहार उसे समझ में आने लगा था। तीनों बच्चे अपने पापा को किसी कीमत में खोना नहीं चाहते थे। मानसी का मन भी आशंकाओं से घिर जाता, सोचती, पता नहीं, सुधाकर को क्या होता जा रहा है। स्वास्थ्य भी दिनों दिन गिरत जा रहा है। मन ही मन मानसी चिन्तित रहती। उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता, मानसिक तनाव शरीर पर अपना कुप्रभाव तो डालता ही है। लेकिन अगले ही पल बेटियों का उज्जवल भविष्य के निर्माण का ज्वलंत प्रश्न सामने आ खड़ा होता वह अपनी पीड़ा को हावी न होने देती, उसने सोच लिया था कि मैं बेटियों को संस्कारों के साथ आत्मनिर्भर अवश्य बनाऊंगी। वह माँ की महान गरिमा को सर्वोच्च पद पर रखना चाहती थी, स्व की सुखद अनुभूति को परा के कल्याण में लगा देना चाहती थी, खुद मिटकर बेटियों के पैरों को इस कठोर धरातल में जमाना सिखाना चाहती थी, आत्मनिर्भरता का मंत्र बेटियों की रग–रग में समाहित करना चाहती थी। बाल–मन, कोमल पवित्र, पर भविष्य के प्रति अंजान थे सुनहरे सपनों

की कल्पना मात्र से बच्चे भयभीत होने लगे थे। वे भी अपनी मां को आत्मनिर्भरता के साथ सब कुछ चुपचाप सहते देख रही थी। उनके कच्चे मन, विवाह जैसे रिश्तों के प्रति आशंकित थे। अनायास बेल बजी, मानसी का ध्यान भंग हुआ वह दरवाजे पर गई, पुरोहित जी सामने खड़े थे, उन्हें मानसी ने आज नवमी के दिन व्रत पूरे होने पर हवन के लिये बुलाया था।

मानसी और बेटियों ने एक दिन पहले ही हवन सामग्री, पूजापाठ फल मिष्ठान आदि की सारी व्यवस्था कर ली थी, मानसी हर वर्ष, इस दिन अवश्य करती है। शक्ति की पूजा कर वह स्त्रीत्व क्रो और शक्तिमयी बनाना चाहती है। पंडित जी ने हवन आदि की व्यवस्था की मानसी ने ब्लॉक के कुछ। लोगों को जो उनके स्टॉफ के थे, बुलाया था। एक दो पारिवारिक मित्रों को भी हवन में बुलाया था, वह सुधाकर की दिनभर प्रतीक्षा करती रही, चार बज गये थे, वह जान बूझकर हवन में देरी करती, जिससे शायद सुधाकर अपने भाई के घर से थोड़ी देर के लिए आ जाये, और मानसी और बच्चों के साथ पूजा कर ले। सुधाकर पांच दिन पहले बच्चों से बोलकर गये थे कि मेरा वहां रहना बहुत जरूरी है, यहां तुम लोगों का हवन करना जरूरी है क्या? पति के इस अप्रत्याशित उत्तर को सुन टूट जाती। इसलिये मानसी ने व्रत से अपने घर की सुख–शांति की भीख मांगी है उस जगत जननी मां की दिव्य शक्ति की आराधना करके। अपने पति के हृदय में सहानुभूति पैदा कर सके, उसे हवन यज्ञ मंत्रों से आत्मिक शांति प्राप्त होती है। यह बात सुधाकर को भी अन्दर ही अन्दर समझ आती थी परन्तु अपने भैया, भतीजे, बहू बच्चे आदि से सानिध्य में रहना उसकी पहली प्राथमिकता थी। वहां की पूजा गाना, बजाना, रात भर जागना, भूत प्रेत भगाना ये सब उनके जीवन की सार्थकता बन गई थी। मनोबल जिसका कमजोर होता है यह कहीं भी गिरने को विवश हो जाता है।

सभी लोगों का आना शुरू हो गया, पूजा शुरू होने लगी, मानसी अपने को बौना महसूस करने लगी थी। शाम होने लगी, मानसी ने पंडितजी से पूछा– 'अभी तक बाहर से मेरे पति नहीं आये हैं पंडितजी।' मुझे अकेले ही हवन करना होगा क्या? वे बोले पत्नी स्वयं में शक्ति होती है, उसे किसी आश्रय की आवश्यकता नहीं, आप चावल में एक सुपारी बांधकर हवन कर सकती है। हॉल में सभी लोग आकर बैठने लगे, मानसी ने ईश्वर को आराध्य मान पूरे मनोयोग से हवन किया, मंत्रोच्चारण किये। मानसी का मुख मंडल आभामय होने लगा। उसकी आत्मा में वैराग्य सा अनुभव हो रहा था। हवन सम्पन्न हुआ, प्रसाद, वितरण हुआ, मानसी के मित्र, पड़ोसी सभी उसके चरित्र, सद्व्यवहार तथा स्वभाव से पूर्णतः परिचित थे। मानसी का अपना स्थान था, समाज में अपनी पहचान थी, वे शांत भाव से जाने वालों को मुस्कुराकर विदा कर रही थी, इतने में सुधाकर सीढ़ियां चढ़ते हुए आये लोगों को नमस्ते करते हुए अंदर चले गये। मानसी सभी के चेहरों को पढ़ रही थी। सभी के मुख पर सहानुभूति के भाव स्पष्ट रूप से झलक रहे थे।

मैं, मानसी की पक्की सहेली थी इसलिये बाद में जाना चाहती थी, मैंने देखा मानस का मन कहीं से रोता है उसने मेरी ओर देखा उसकी आंखों में अन्तः पीड़ा के भाव साफ–साफ दिख रहे थे, मैंने उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में लिया सहानुभूति पाकर मानसी की आंखें बरस पड़ी। धीरज को पाकर वह शीघ्र ही संयमित हो गई। अपनी सहेलियों को नीचे तक भेजकर ऊपर आते हुये, मानसी की छोटी बेटी अंकिता ने मां की लाल–लाल आंखों को देखा वह समझ गई, पापा के इन उपेक्षा भरे व्यवहारों से मम्मी दुःखी है अगले ही पल मानसी ने चश्मा हटाकर, किचन में जाकर मुंह पोछा आंखों को पानी से धोती हुई कमरे में आई और मुझसे बोली, ये हवन का धुंआ आंखों में बहुत लग रहा है, मैं मानसी के झूठे आवरण को देखे जा रही थी। थोड़े देर बाद मैंने भी मानसी से विदा ली। नई अन्तःशक्ति के साथ, नई प्रेरणा और आत्मविश्वास के साथ वह मुझे बाहर तक छोड़ने आई। मेरा मन, उसकी शक्ति, आत्म विश्वास, कर्तव्य निष्ठा, और धैर्य की मन ही मन सराहना करने लगा। मानसी लौटते हुए अपने मुख भाव को बदल चुकी थी, गर्म लोहे की भांति कई बार पिघलकर ठंडी हो चुकी थी, वह सोचने लगी मेरा ईश्वर यह अदृश्य सत्ता, मेरी सत्यनिष्ठा, मेरी कर्तव्यपरायणता का सुफल अवश्य देगा, मेरे घर की खुशियां वापस जरूर आयेंगी उसे सुनहरे कल पर अटूट विश्वास था।

❖❖❖

एक नई दिशा

❑ : राधा जर्नादन

मातृत्व! नारी को ईश्वर से प्राप्त एक अनुपम उपहार है। जहाँ एक ओर मातृत्व नारी को समाज में सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर निस्संतान नारी समाज, परिवार यहाँ तक कि स्वयं नारी ही जाति द्वारा कठोर वाणी का प्रहार झेलती, उपेक्षित जीवन व्यतीत करती है।

यदि मातृत्व ! ईश्वर प्रदत्त वरदान है तो ईश्वरीय प्रसाद स्वरूप जन्मी संतान को अपने माथे से लगा प्रसन्नतापूर्वक उसे स्वीकार भी करना चाहिए, फिर चाहे वह बेटा हो अथवा बेटी। ऐसे ही आधुनिक एवं उच्च विचारों से रची बसी कॉलेज में व्याख्याता के पद पर कार्यरत अनुजा अपनी कक्षाओं में प्रायः निःसंतान प्रताड़ित नारियों की वेदना समाज एवं परिवार में बेटियों की उपेक्षा तथा कन्या–भ्रूण हत्या जैसे विषयों पर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान देती थी। उसके व्याख्यानों से प्रभावित होकर लोग इन विषय वस्तुओं पर गंभीरता से सोचने हेतु बाध्य हो जाते थे।

विवाहोपरांत मानव संवेदनाओं एवं भावनाओं से परिपूर्ण अनुजा ने ससुराल में भी सबका मन जीत लिया था। आज जब वह सोकर उठी तो उसे एक विचित्र सी बेचैनी एवं मिचली की अनुभूति हुई। रात में तो उसने हल्का–फुल्का खाना ही लिया था अतः बदहजमी या गैस का प्रभाव तो हो ही नहीं सकता। तभी उसके मन में कुछ ऐसा विचार आया कि शर्म से उसका गौरवर्ण मुख आरक्त हो उठा। उसने मन ही मन कुछ निश्चय लिया और अपने समस्त दैनिक कार्यों को समय से पूर्व ही पूर्ण कर लंचबाक्स ले कॉलेज जाने के लिये तैयार हो गई। अपनी सासू माँ सुनीता जी को कुछ आवश्यक कार्य हेतु समय से पूर्व ही कॉलेज पहुंचने की अनिवार्यता की जानकारी देकर वह समय से एक घण्टा पूर्व ही घर से निकल पड़ी। अस्पताल में स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा चेक अप एवं परीक्षण की रिपोर्ट से अनुजा के शक की पुष्टि हो गई थी। डॉक्टर की बधाई स्वीकार करते हुए मातृत्व की गरिमा एवं प्रसन्नता के समवेत प्रभाव से उसका मुख आरक्त हो चमक उठा। यह शुभ समाचार अपने पति आलोक को सुनाने हेतु वह व्यग्र हो उठी। राम–राम करके कॉलेज का समय व्यतीत हुआ।

कॉलेज से लौटकर वह पकौड़े बनाने की तैयारी कर आलेख का इंतजार करने लगी। माँ जी पड़ोस में बैठने गयी हुई थीं। अनुजा के जेठ डॉ. गौरव अपनी पत्नी '' मुक्ता'' तथा दो बेटियों ''श्रवणी'' एवं ''शख्या'' के साथ इंदौर में पदस्थ थे। आलेख इरीगेशन विभाग में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर उज्जैन में ही थे।

अनुजा के विवाह के समय जिठानी ''मुक्ता'' को बड़ी बेटी श्रवणी चार वर्ष की थी एवं पांच माह की प्रेगनेन्सी थी। चार माह उपरांत दूसरी संतान बेटी ही पैदा हुई। बड़ी बहु की दूसरी बेटी का जन्म सुनीता जी को निराश कर गया। उनके विचारानुसार ''यह एक या दो बच्चों का ही जमाना है अतः यदि एक बेटा होता तो अच्छा होता।'' यद्यपि वे शिक्षित एवं नवीन विचारधारा वाली

महिला थीं फिर भी उनकी हल्की सोच–'बेटे से वंश का नाम चलता है' भी थी। इस बात को लेकर वे एकदम कट्टर भी नहीं थीं किंतु बातों ही बातों में उनका यह विचार जाहिर हो ही जाता था।

आलेख ऑफिस से आकर फ्रेश होने चले गये थे। अनुजा एक बर्नर पर चाय का पानी चढ़ाकर दूसरे पर कड़ाही चढ़ा पकौड़े बनाने लगी। वह मन ही मन सोचती जा रही थी कि यह खुशखबरी वह आलेख को किस तरह से बतलाए? माँ जी अभी पड़ोस में वापस नहीं लौटी थीं। यह सोचकर कि शायद उन्होंने चाय वहीं पी ली हैं, उसने चाय केटली में छान ली। उसे लग रहा था कि माँ के आने से पूर्व ही वह यह समाचार आलेख को सुना दे–लेकिन किस प्रकार ? उसे सूझ ही न रहा था तभी उसे एक तरीका सूझा और वह प्रसन्न हो मुस्कुराने लगी। उसने पकौड़ों के साथ खाने के लिये टोमैटो सॉस एवं एक कटोरी में नींबू बेस मिक्स आचार निकाल लिया। आलेख के सामने सॉस के साथ गरमागरम पकौड़े खाती हुई बातें करने लगी। वह चेहरे पर सस्मित भाव ला जानबूझ कर जोर जोर से चटखारे ले लेकर आचार खा रही थी। प्रारंभ में तो इस ओर आलेख का ध्यान ही नहीं गया किंतु अचानक अनुजा की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगा। आलेख ने अनुजा को अपने प्रिय टोमैटो सॉस की जगह नींबू के आचार के साथ पकौड़े खाते देखकर शरारत से मुस्कुराते हुए पूछा– क्या बात है? उत्तर में अनुजा ने शर्माते हुए मुस्कुराकर सिर झुका लिया। आलेख प्रसन्नता के आवेग में खड़ा होकर बोला सच और अनुजा के गले में पीछे से बाहें डाल दीं। तभी किसी के आने की आहट पाकर वह वहाँ से हट गया।

दो–तीन दिन पश्चात जब यह शुभ समाचार सुनीता जी को मिला तो वह अत्यंत प्रसन्न हुई और अनुजा को तरह तरह की नसीहतें दें उसके खाने पीने का बहुत ध्यान रखने लगीं। सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था तभी अनुजा का ध्यान गया कि माँ जी कुछ दिनों से चिंतित एवं उदास सी रहने लगी हैं। ऐसा लगता था जैसे वे कुछ कहना चाहती हैं परंतु कह नहीं पा रही हैं। अंत में एक दिन खाने की टेबिल पर बातों ही बातों में उनके मन की बात बाहर आ गई और बात भी ऐसी कि अनुजा के सिद्धांतों को चूर–चूर करने वाली। कुछ पल के लिए तो सन्न रह गई थी अनुजा ।

माँ ने बहु के रूप में अनुजा का चयन उसके उच्च विचारों से परिपूर्ण व्याख्यानों को सुनकर ही किया था फिर आज ऐसी बौनी सोच ? उसने स्वप्न में भी न सोचा था कि इस घर में कभी इस प्रकार के विचार भी जन्म ले सकते हैं। उसे तो अपनी उच्च शिक्षित माँजी पर गर्व था। इतने संकीर्ण विचारों का यह संक्रमण आखिर वे कहाँ से ले आई? बिना कुछ बोले अनुजा डायनिंग टेबिल से उठकर बर्तन समेट किचेन में चली गई।

रात देर तक आलेख के साथ अनुजा की बहस होती रही। ऐसा नहीं था कि अनुजा उद्दण्ड, बड़ों की अवज्ञा करने वाली बहू थी। उसके विनम्र, शालीन, मृदुभाषी व स्वभाव ने ही सुनीता जी को आकृष्ट किया था। इसके अलावा माँ जी की अन्य किसी भी आज्ञा को वह आज भी शिरोधार्य करने के लिये सहर्ष तैयार थीं। किंतु इस बात पर उसे कोई समझौता मंजूर नहीं था। बड़ों की अवज्ञा करना उसने सीखा ही नहीं था अत: उसने माँ जी की इस बात पर चुप्पी ही साध ली थी। आलेख भी अपनी माँ के विचारों से सहमत नहीं थे परंतु वे इसे अन्य तरीके से टालना चाह रहे थे।

सुनीता जी ने कहीं पढ़ा था कि गर्भधारण के दस से बीस सप्ताह के बीच एम्नियोसेंटेसिस परीक्षण द्वारा भ्रूण में यदि कोई असामान्यता है तो पता चल जाता है और ऐसे असामान्य बच्चे को जन्म देने से अच्छा है कि उसे गिरा दिया जाए। इस परीक्षण से भ्रूण के लिंग का भी पता चल जाता है कि वह लड़की है अथवा लड़का। सुनीता जी के विचारानुसार दस सप्ताह अर्थात् ढाई माह, यदि इस समय तक कन्या होने का पता लग जाए तो एबार्शन कराने में न तो कोई खतरा है और न ही पाप। उनके विचारों एवं पुरातन धारणानुसार तीन माह पश्चात् ही भ्रूण में जान पड़ती है।

वैज्ञानिकों द्वारा मानव समाज की भलाई हेतु ही आविष्कार किये गये हैं परंतु हम मनुष्य ही उसकी अच्छाई को अनदेखा कर उसका उपयोग नकारात्मक दिशा में करने लगते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की समाज में एक छबि होती है चाहे वह बुजुर्ग हो, महिला हो अथवा युवा। अनुजा महाविद्यालय में शिक्षा लेने वाले, अपने छात्र–छात्राओं के लिये एक मिसाल थी, उनका गौरव थी। आज यदि वह अपने सिद्धांतों को ताक में रखकर अपनी संवेदनाओं एवं भावनाओं का हनन कर घर की शांति हेतु माँ जी का कहना मान लेती है तो उसके सिद्धांतों एवं उन जोशीले भाषणों

का क्या जो वह अपनी कक्षाओं, आयोजनों एवं सभाओं में देती रही है। उसकी सर्वस्व गरिमा मिट्टी में नहीं मिल जाएगी। समाज में वह हंसी का पात्र नहीं बन जाएगी ? उस पर लोगों की उंगलियाँ नहीं उठेंगी ? वह लोगों से कैसे दृष्टि मिला पाएगी? आदि विचारों के बवंडर थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। उसने अपने विचारों पर अवरोध लगाया नहीं वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगी। गृह कलह दूर करने का वह कोई अन्य विकल्प ही सोचेगी।

दूसरे दिन जब वह सोकर उठी, मन बहुत हल्का था। उसने आलेख द्वारा माँ जी तक संदेश पहुंचा दिया कि वह एम्नियोसेंटेसिस परीक्षण करा लेगी परंतु अपनी सुविधानुसार अकेले ही अस्पताल जाएगी जिससे लोगों को इसकी भनक भी न लगे। इस प्रकार बात यही समाप्त हो गई और इस संदर्भ में चर्चाएं बंद हो गई। नौ दस दिन व्यतीत हुए होंगे कि एक दिन शाम को आलोक ने घर आकर बतलाया कि वह अपने एक बीमार दोस्त को देखने अस्पताल गया था कि एक पैथालॉजिस्ट ने जो शायद उसे पहचानता था बुलाकर कहा कि आपकी मिसेज ने टेस्ट कराया था परंतु रिपोर्ट लेने नहीं आई कृपया आप ही उन्हें दे दीजिएगा–कहते हुए आलेख ने रिपोर्ट माँ के हाथ में पकड़ा दी। रिपोर्ट पढ़कर माँ के मुख पर मुस्कान की एक लहर दौड़ गई।

इधर कुछ दिनों से अनुजा कॉलेज से आकर प्रायः किसी से देर–देर तक लम्बी बातें करती रहती थी–विशेषकर तब जब माँजी घर में न होती थीं। इधर कुछ दिनों से सुनीता जी को आलेख के व्यवहार में कुछ परिवर्तन दिखाई देने लगा था। वे रात में देर से लौटते अतः सुबह देर तक सोते रहते थे। उठने के बाद इतना सीमित समय होता था कि बस तैयार हो खाना खाकर ऑफिस चले जाते थे। उनकी इस दिनचर्या के कारण सुबह–शाम चाय एवं नाश्ते के समय होने वाली बात–चीत का सिलसिला ही लगभग समाप्त हो गया था। एक रात आलेख के घर लौटने पर जब सुनीता जी ने दरवाजा खोला तो उन्होंने शराब की हल्की सी गंध महसूस की। उन्हें अपने बेटों पर अत्यंत विश्वास एवं गर्व था अतः इस विचार को उन्होंने झटक कर दूर हटा दिया। अनुजा भी अब घर में काम, बाहर के कार्यक्रमों में अधिक व्यस्त रहने लगी थी। घर के कार्यों एवं जिम्मेदारी से कोई मतलब ही न रह गया था। सुनीता जी संबंधों के बीच बढ़ती जा रही दूरियों का अनुभव कर चिंतित हो उठीं। बेटे बहु से पूर्ववत संवादों हेतु उन्होंने पहल करके भी देखा परंतु उनका प्रयास व्यर्थ ही रहा। इस उम्र में अकेली वे भी कहाँ तक घर के कार्य सम्हालती अतः एक दिन परेशान होकर अपने बड़े बेटे की बात की तो लगा उससे बातें कीं। अंत में अपनी परेशानी बतलाते हुए अपने पास इंदौर बुला लेने की बात की तो उधर से बेटे ने व्यस्तता के कारण आने में असमर्थता जतलाई। बड़े बेटे का यह व्यवहार उनके मन को व्यथित कर गया, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा। अब वे प्रायः अस्वस्थ सी लेटी ही रहती थीं। एक दिन उन्होंने अपनी बेटी आभा को फोन लगाकर उससे बातें की। उनकी परेशानी सुन बेटी व्यथित हो उन्हें दिलासा देकर समझाती रही। अब तो चाहे जब तब वे बेटी आभा एवं दामाद जी से बातें कर मन हल्का कर लेती थी। एक दिन आभा एवं उसके पति ने उन्हें अपने पास बुला लेने का प्रस्ताव रखा तो वे संकोच में पड़ कर बात को टाल गईं। अब तो दामाद जी उनके प्रति प्रेम सम्मान दर्शाते हुए आए दिन अपने पास आने का आग्रह करने लगे। इधर आलेख का माँ से केवल औपचारिक रूप से ही संबंध रह गया था। वे माँ की आवश्यक दवाएँ लाकर दे देते थे।

उनके स्वास्थ्य के बारे में कभी कभार अनमने मन से पूछ लेते थे। उनके बीच अब संवाद भी संक्षिप्त होते जा रहे थे। बड़े बेटे के तो फोन ही आने बंद हो गये थे। अंत में परेशान हो अपनी समस्त पुरानी मान्यताएँ ताक में रखकर बेटी आभा के यहां जाने के लिये तैयार हो गई। बेटी दामाद उन्हें लेने भी आ गये। उन्होंने जब आलेख एवं अनुजा के समक्ष माँ जी को अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव रखा तो वे दोनों सहर्ष तैयार हो गये। उन दोनों के इस व्यवहार ने भी उनके मन को आहत किया। उन्हें लगा जैसे वे दोनों यही चाहते थे। सुनीता जी बेटी के साथ चली तो गई किंतु उनके मन के किसी कोने में फाँस सी चुभी ही रहती। बेटी के घर में समस्त सुख सुविधाओं के होते हुए भी वे अनमनी सी ही बनी रहती थीं।

एक माह से अधिक का समय हो गया था किंतु किसी बेटे–बहु ने उनका हाल चाल पूछने हेतु एक फोन तक न किया था। जब भी कोई फोन आता, उनके चेहरे पर आशा की किरण सी झलक उठती थी–वे बेटी से पूछतीं भी थीं–किसका फोन था? परंतु उत्तर उन्हें पुनः निराश कर जाता था। आज उन्हें बेटी का महत्व समझ में आ रहा था। उन्हें याद आ रहा था कि उन्होंने खाने–पीने, पढ़ाई–लिखाई, पसंद–नापसंद आदि सभी बातों में तो

बेटों के बीच भेदभाव रखा था। उच्च शिक्षित होते हुए भी मन से वे कितनी संकीर्ण थीं? यही सब सोच–सोच कर उनकी हालत दिनों–दिन गिरती जा रही थी। आज उन्हें अनुजा के सिद्धांतों के विरूद्ध परीक्षण कराने के लिये अपने द्वारा की गई दजिव याद आ रही थी। उन्हें याद आ रहा था कि ठीक उसी के पश्चात् ही तो आलेख एवं अनुजा का प्रेम व्यवहार उनके प्रति परिवर्तित हो गया था। दिन भर बिस्तर पर लेटी वे पश्चाताप की अग्नि में झुलसती रहती थीं।

एक दिन वे बेटी आभा से अपने अंतस की बात कह ही बैठीं। आभा और उसके दोनों भाईयों के बीच अपने द्वारा किये गये भेद–भाव संबंधी अपने मन की सारी मलिनता बेटी के समक्ष उजागर कर दी। तू घर के कार्यों में मेरा हाथ बँटाते हुए भी सदैव प्रथम आती थी तब भी मैंने तुझे कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया। तू मेडिकल की पढ़ाई कर डॉक्टर बनना चाहती थीं किंतु मैंने तेरी ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया बस बेटों का ही भविष्य संवारने में लगी रही। खाने–पीने, वस्त्र, पसंद–नापसंद आदि किसी बात पर मैं तेरे प्रति कभी निष्पक्ष नहीं रही। मेरा झुकाव सदैव बेटों की ओरहा। आज ईश्वर ने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैंन मोड़ लिया तब बेटी होकर तूने ही मेरी वेदना समझी और अपने पास लाकर प्रेम से मेरी सेवा सुश्रूषा कर किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी। वे कहती रहीं बेटा–बेटी दोनों ही माँ के गर्भ में पलते हैं दोनों के जन्म के समय समान प्रसव–वेदना होती है तो फिर बेटे–बेटी में भेद–भाव क्यों? आज मुझे शर्म आ रही है अपनी बौनी सोच पर। आज मैं अनुजा की भी गुनहगार हूँ। मैं उससे मिलकर अपनी नकारात्मक सोच को स्वीकार करना चाहती हूँ। उसका कहना पूर्णतया सत्य है कि आज लड़कियाँ ही हर क्षेत्र में लड़कों से बाजी मार रही हैं। हम नारी हैं हमें नारी शक्ति का सम्मान करना चाहिए।

आभा ने माँ की बातों का समर्थन करते हुए कहा– हाँ माँ! संवेदनाएँ एवं भावनाएँ तो बेटे–बेटी दोनों में ही होती हैं। बेटी–बेटे के बीच किये गये भेदभाव एवं बेटी के लिये वर्जनाओं का आघात मन को बहुत आहत करता है इसे मैंने स्वयं झेला है–इसलिये जानती हूँ। माँ बेटी का झुकाव माता–पिता की ओर अपेक्षाकृत अधिक होता है। किंतु आप बहुत भाग्यशाली हैं जो आपके दोनों बेटे–बहु भी इतने अच्छे एवं आपका मान–सम्मान करने वाले हैं। उनके द्वारा आपके साथ किया गया यह व्यवहार केवल आपकी सोच बदलने हेतु ही था, जो सफल भी रहा ।इसी बीच उन्होंने भी आपसे कम मानसिक वेदना नहीं झेली है। माँ!इस नाटक में हम सब साथ थे।

तभी खिलखिलाकर हँसते हुए आलेख एवं अनुजा ने कमरे में प्रवेश किया। अनुजा अत्यंत विनम्रता पूर्वक अपने द्वारा किये गये व्यवहार हेतु क्षमा–याचना सहित माँ जी के पैरों में झुक गई यह कहते हुए– माँ! अस्पताल की वह रिपोर्ट गलत थी।

❖❖❖

मान्यताएं

दरअसल मान्यताएं हमारे दिलों में इतनी रच बस गई हैं कि धर्म का हवाला देकर हम नाहक ही नैतिकता की सीमाएं लांधने लग जाते हैं। संतान परिवार की कसौटी है बच्चों की चिलकारियों से घर आंगन झूमते है। यह कामना सब की होती है इसमें लड़का हो या लड़की कोई अंतर नहीं पड़ता परंतु कुछ लोग बेटियों का घर में जन्म लेना संतान नहीं मानते उन्हें तो बस बेटा ही चाहिए। अपने वंश को चलाने का झूठा झासा, दिलासा और खोखली मान्यताओं के चलते इस तरह बेटियों की खुशियों को गम में बदल देती है जबकि बेटे इस चाहत का कभी–कभी विपरीत सिला देते हैं। बेटे वंश नहीं चलते बल्कि वंश की पीढ़ियो को प्रभावित करते हैं मनचाही शादियां करके। पढ़ी लिखी यही पीढ़ी आज अपने दादा–दादी को माता–पिता को व्यर्थ का समान समझते हैं। आज हम तरक्की की राह पर हैं जहां बेटियां कामयाबी में किसी से पीछे नहीं है।

आलेख

स्त्री विमर्श से जन्मी स्वावलम्बी महिलाएं

❑ : पूजा कश्यप

काल भले ही कोई रहा है। स्त्री अनेक वर्जनाओं का शिकार होती रही है। समाज– निर्माण के दो आवश्यक तत्वों में से एक स्त्री एक पुरूष दोनों ही एक दूसरे के पूरक, परंतु सामाजिक संचालन में एक पूर्णतः स्वतंत्र और दूसरे के पैर में बेड़ी, गतिरोध उसके सतत् प्रवाह में तमाम कुठाएँ हमारे सामाजिक ढाँचे को कमजोर नींव कही जा सकती हैं।

आधुनिक स्त्री संचेतना मनुवादी पितृसत्तात्मक मूल्यों और अवधारणाओं की भर्त्सना करती है जिससे नये परिप्रेक्ष्य में नए प्रश्न, नयी चुनौतियाँ उभर रही हैं। अब तक समाज की दृष्टि में स्त्री उत्तेजित करने वाले अंगों से बनी देह थी, वह यह मानने को तैयार नहीं था कि स्त्री का अपना एक मस्तिष्क है, एक संवेदनशील हृदय है। लिंग केन्द्रित प्रभुत्व टकराने का साहस स्त्रीवादी लेखिकाओं ने किया उन्होंने सामन्ती मापदण्डों को चुनौती दी है और समाज से बेबाकी से प्रश्न किए हैं। स्त्री विमर्श से उठने वाले सवाल मात्र स्त्रियों से जुड़े नहीं अपितु समाज की परम्परा और मान्यताओं से जुड़े प्रश्न हैं कि क्यों कर ऐसे नियमों का निर्माण हुआ कि स्त्री का जीवन युगों–युगों तक पराधीन हो गया?

21 वीं सदी की नारी अपने अधिकारों से भली भाँति परिचित है। आज की नारी दीन–हीन नहीं सबल, समर्थ तथा स्वावलंबी है। नारी की अब समाज में दोहरी भूमिका है इस भूमिका को कई नकारात्मक दृष्टिकोण से परखते हैं कुछ सकारात्मक दृष्टिकोण से। भारतीय समाज में आ रहे टूटन का जिम्मेदार पूरी तरह से पश्चिमी

सभ्यता तथा चकाचौंध पर नहीं लगाया जा सकता। आज स्त्री समाज में स्वावलम्बी हो पाई है क्योंकि समाज कहीं न कहीं बदला है, समाज भी अब कहीं न कहीं स्त्री स्वावलम्बन पर आ टिका है जिससे उसके आत्मसम्मान में लगातार वृद्धि होती जा रही है। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबंधों को नकारने की क्षमता भी हासिल कर रही है। अब वह इसी स्वावलम्बन के सहारे समाज की संकीर्ण परम्पराओं से परे मुक्ति की राह पर चल सकती है।

असल में औरत को हीन बनाने में उसके परजीवी होने के साथ–साथ समाज की आचार संहिताएँ भी जिम्मेदार थीं। स्त्री स्वावलम्बन उसे इन बेड़ियों से मुक्त करने का एक मजबूत आधार देता है। स्वावलम्बन की चेतना शिक्षा और संघर्ष से ही सम्भव है। स्वावलंबन स्त्री में स्वाभिमान पैदा करता है और स्वाभिमान उन्हें चेतना से सम्पन्न करता है। यही चेतना उनके सामर्थ्य का निर्माण करती है और उसे संगठित करने के लिए प्रेरित भी करती है। इसलिए स्त्री सशक्तिकरण के लिए आर्थिक स्वावलम्बन, स्वाभिमान और संगठन की राहें सुझाई गई हैं।

आज उसके विश्वास और आत्मचेतना को नारी कहकर तिरष्कृत नहीं किया जा सकता। समय ने नारी का स्वभाव और चरित्र दोनों बदले हैं, वह अपने अधिकारों के बदले बखूबी जागरूक हुई है। राजनीति प्रशासन, समाज, उद्योग, व्यवसाय, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, फिल्म, संगीत, साहित्य, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, कला–संस्कृति, शिक्षा, आई.टी., खेलकूद, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। वक्त के चलते ये मिथक भी टूट गया कि वह सुरक्षा जैसा कार्य नहीं कर सकती। रूढ़ियों को धत्ता बताकर महिलाएँ जमीं से लेकर अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में नित नई ऊँचाई स्थापित कर रही हैं। महिलाओं को सम्पत्ति में बेटे के बराबर हक देने हेतु हिन्दू उत्तराधिकार, अधिनियमों में संशोधन, घरेलू महिला हिंसा अधिनियम, सार्वजनिक जगहों पर यौन उत्पीड़न के विरूद्ध नियम एवं लैंगिक भेदभाव के विरूद्ध उठती आवाज नारी को मुखर कर रहीं है। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, शराबखोरी, लिंग विभेद जैसी तमाम बुराईयों के विरूद्ध नारी आगे आ रही है। ये तमाम घटनाएँ अधिकारों से वंचित नारी की उद्विग्नता को प्रतिबिम्बित कर रही है। आज वह स्वयं को सामाजिक पटल पर दृढ़ता से स्थापित करने को व्याकुल है। परम्परागत शर्मीली संकुचित सी खड़ी स्त्री अब रूढ़िवादिता के बंधनों को तोड़कर अपने अस्तित्व का आभास कराना चाहती है। वर्तमान काल में स्त्री अपनी सम्पूर्णता को पाने की राह पर निरंतर बढ़ रही है, ताकि समाज के नारी विषयक अधूरे ज्ञान को अपने आत्मविश्वास की लौ से प्रकाशित कर सके।

साहित्य में प्रेमचंद के बाद आदर्शवाद की लौ जहाँ कमजोर हो चली थी वही स्त्री स्वचेतना की रोशनी बढ़ती जा रही थी। 70 के दशक से ही नई युवा पीढ़ी बदले नजरिये के साथ सामने आ रही थी। शिक्षा, रोजगार, स्त्री संगठन, पर्यावरण, मूल्य वृद्धि, शराब, स्त्री के प्रति हिंसा, श्रम का असमान वितरण, लिंगीय असमानता, दहेज, बलात्कार, ट्रेडयूनियन जैसे मुद्दों को लेकर स्त्री आंदोलन मुखर हो रहे थे। स्त्री आंदोलन की राह की लोकतंत्रिक प्रक्रिया को पूरे विश्व में स्वीकार किया गया। 1975 अंतर्राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित होने के बाद यहाँ भारत में 1975 में आपातकाल के बाद इसका दुष्प्रभाव यहाँ के स्त्री आंदोलनों पर भी पड़ा। यह समय गहरे अंतर्विरोधों, चुनौतियों और संघर्षों का समय था।

रचनाकारों की नई स्त्री छबियों ने स्त्री के सामाजिक अकेलेपन और हीनता बोध को कुछ हद तक कम किया। सामंतवादी पितृसत्ता के समक्ष वह अब अपने नए हथियारों के साथ दृढ़ रूप से खड़ी थी। स्त्री साहित्य के माध्यम से नारी ने जहाँ पुराने समय से चली आ रही कु–प्रथाओं पर चोट की, वहीं समाज को नये विचार दिए, उन्होंने औरत की सोचने की क्षमता को भी विकसित किया। अपनी विशिष्ट पहचान के साथ नारी साहित्यिक व सांस्कृतिक गरिमा को नई ऊंचाईयाँ दे रही है। उसके लिये चीजें जिस रूप में बाह्य स्तर पर दिखती हैं, सिर्फवहीं सच नहीं होती बल्कि उनके पीछे आंदोलन के प्रभाव स्वरूप

उसकी संवेदना, भाषा, सत्ता और समाज में हिस्सेदारी के गहरे प्रश्न साहित्य में प्रमुखता हासिल कर रहे थे। स्त्री रचनाकारों ने पाठक से सीधा सम्पर्क स्थापित कर व्यापक जनाधार निर्मित किया। स्त्री की संवेदनात्मक संचेतना ने उसकी अभिव्यक्तियों को विस्तार दिया, साहित्य व लेखन में उसने अपने प्रभाव को बढ़ाया। महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रथम भारतीय ज्ञानपीठ महिला विजेता (1976) आशापूर्णा देवी, शिवानी, चन्द्रकांता, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, ममता डालिया, मृणाल पाण्डे, चित्रा मुदगल, कृष्णा सोबत्ती, निर्मला जैन, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, पुष्पा भारती, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, सुनीता जैन, रमणिका गुप्ता, अल्का सरावगी, मालती जोशी, डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, मेहरून्निसा परवेज, ज्योत्सना मिलन, डॉ. सरोजिनी प्रीतम, मगन गिल, सुषमा बेदी, पद्मा सचदेव, क्षमा शर्मा, अनामिका, इत्यादि नामों की लम्बी सूची है, जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को ऊँचाईयों तक पहुंचाया। उनका साहित्य आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियों को अपने में समेटे, समय के साथ परिवर्तित समाज की सांस्कृतिक और दार्शनिक बुनियादों को समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करते हुए उन्होंने अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाशीलता का एक ऐसा आकर्षक भव्य और गम्भीर संसार निर्मित किया, जिसका चमत्कार सारा साहित्यिक जगत् महसूस करता है।

साहित्य के माध्यम से नारी ने जहाँ पुराने समय से चली आ रही कु–प्रथाओं पर चोट की, वहीं समाज को नये विचार दिए, उन्होंने औरत की सोचने की क्षमता को भी विकसित किया। अपनी विशिष्ट पहचान के साथ नारी साहित्यिक व सांस्कृतिक गरिमा को नई ऊँचाईयाँ दे रही है। उसके लिये चीजें जिस रूप में बाह्य स्तर पर दिखती हैं, सिर्फ वही सच नहीं होती बल्कि उनके पीछे छिपे तत्वों को भी उसे ढूंढ निकालना पड़ता है। उनका लेखन परम्पराओं, विमर्शी, विविध रूचियों एवं विशद् अध्ययन को लेकर अंततः संवेदनशील लेखन में बदल जाता है। शिक्षित नारी ने अपना चेहरा बदला है, अपनी संवेदना को अपने प्रति भी जाग्रत किया है, अब उसके मन के कोमल भावों से क्रीड़ा करना आसान नहीं, अब स्त्री पूज्या नहीं समानता के स्तर पर व्यवहार चाहती है। सदियों से हमारे समाज ने स्त्री को पूज्य बनाकर उसको आभूषणों से लादकर, आदर्शों के पूला के बोझ से उसकी बुद्धि को कुंद करने का कार्य किया।

समकालीन साहित्य में स्त्री समाज की उपस्थिति ने स्त्री स्वावलम्बन को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी में स्त्री लेखन की जो वैचारिक और पारम्परिक धारा रही है उनमें मीराबाई, पंडित रमाबाई, महादेवी वर्मा जैसी लेखिकाएँ भारतीय सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित एवं संचालित करने वाली व्यवस्था वर्ण व्यवस्था तथा पितृसत्ता को सीधी चुनौती देने का साहस करती हैं दूसरी नई धारा की लेखिकाएँ पश्चिम के प्रभाव में है और पितृसत्ता को सीधी चुनौती देती हैं–

जो तुमने पाया
वह तुम्हारा सामर्थ्य
नारी ने स्वयं कुछ किया
तो बेहयाई
अब बताओ
तुम्हें शर्म क्यों नहीं आयी?
जल चुकीं
बहुत मोमबत्तियाँ
आज वह जंगल की आग है
बुझाए न बुझेगी
बन जाएगी
आग का दरिया
सुशीला टाकभौरे

परम्परा के नाम पर मौजूद इस प्राचीन व्यवस्था का स्त्रियों ने सर्वाधिक विरोध किया और इससे मुक्ति की बातें की। स्त्री लेखिकाओ ने स्त्री के त्रासद जीवन को हिंदी की हर विधा में समेटा है जिनमें कहानियाँ, उपन्यास और कविताएँ प्रमुख हैं। महिला लेखिकाओं ने नई स्त्री की स्वावलम्बी छबि के समक्ष पुरूष वर्चस्व को सिरे से अस्वीकर किया है। समाज के हासिये पर खड़ी स्त्री के लिए समकालीन लेखिकाएँ बेहतर जगह की माँग करती हैं, वहीं पितृसत्ता शास्त्र को भी नकार देती हैं–

माँ मैं तुम्हारी तरह किसी जर्जर हवेली की बदरंग दीवारों पर
लतरबेल बनकर नहीं पसरना चाहती
मैं पीपल बरगद आम कटहल की तरह
पूरा का पूरा एक पेड़ बनना चाहती हूँ
इच्छाधारी अस्तित्वधारी एक पेड़

स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। आधुनिक युग में इसे एक जीवन मूल्य के रूप में भी देखा जाता है। युगों से पराश्रित रही स्त्री आजादी की ख्वाहिश को नारीवादी आंदोलन की संज्ञा मिली है। आरंभिक काल में यह आंदोलन पुरूष विरोधी प्रतीत हुआ जबकि यह भारतीय व्यवस्था विरोधी आंदोलन है जिसके तहत स्त्री दबी, कुचली, सहमी व पराश्रित है। यह आंदोलन व्यवस्था में परिवर्तन की माँग करता है। 21 वीं शताब्दी में शिक्षा के बढ़ते प्रचार–प्रसार, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक जागृती आदि के परिणाम स्वरूप पहली बार वह अपने अस्तित्व की ओर जागृत होती है। अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के बाद पूरे विश्व में नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई यहीं से ही साहित्य में भी नारीवादी विचारधारा का उद् गम होता है। हिंदी में नारीवादी दृष्टिकोण के आरंभ से पहले अनेक लेखिकाएँ अपने उत्कृष्ट साहित्य लेखन के द्वारा प्रतिष्ठित हुई। नारीवादी विचार से सीधा सम्बन्ध न होते हुए भी इन लेखिकाओं ने पहली बार साहित्य में स्त्री को स्त्री की आँख से देखने का प्रयास किया है। पुरूष रचनाकारों ने भी स्त्री स्वतंत्रता और उसके स्वावलम्बन के महत्व को समझा और साहित्य में नई छवियों का निर्माण किया इनमें हालाँकि अंतर्विरोध भी थे परंतु फिर भी इन छवियों ने स्त्री के सामाजिक अकेलेपन और हीनता–बोध को कम किया। स्वतंत्रता और संघर्ष के साथ पुरूष, परिवार और समाज के साथ स्वस्थ सम्बन्धों की आकांक्षा व्यक्त की गई। उसका सम्पूर्ण वंचनामुक्त होकर साहित्य के अंग बन गये। उसकी संवदेना, भाषा, सत्ता और समाज में हिस्सेदारी के प्रश्न साहित्य में प्रमुखता हासिल करते हैं।

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण निजीकरण के समय ने भी स्त्री जीवन को विराट रूप से प्रभावित किया। इस काल में 'स्त्री शरीर' स्त्री सौन्दर्य, और स्त्री कामुकता को विज्ञापनों के माध्यम से बाजार जमाए गए यहाँ सबसे बड़ी विडम्बना यह रही कि स्त्री जिस पितृसत्ता के विरोध में तीन दशकों से संघर्षरत् थी उससे कहीं न कहीं उसने दोबारा गठबंधन कर लिया जिससे इस व्यवस्था के सुप्त हुए अनेक रूप फिर से जाग उठे हालाँकि कुछ नए रूपों, नए संदर्भों का निर्माण भी होता रहा। अभय कुमार दुबे अपनी पुस्तक भारत का भूमंडलीकरण, पितृसत्ता के नये रूप में लिखते हैं– औरत के लिए इस युग की खास बात यह थी कि इसकी आधारभूत विचारधारा में लैंगिक टकराव के लिए कोई प्रावधान नहीं था। बाजार की संरचना लैंगिक तटस्थता के आस–पास बताई जा रही थी। नारिवादियों की बौद्धिक गति अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और आर्थिक विज्ञान के क्षेत्र में न के बराबर थी। यह कहना ठीक होगा कि इन दोनों सर्वाधिक मर्दवादी अनुशासनों में उनका बाकायदा प्रवेश ही नहीं हुआ था।

अनेक विषमताओं और भ्रमवादी सामाजिक अनुशासन के बीच भी स्त्री चाहे वो किसी भी वर्ग की क्यों न रही हो देहरी से बाहर निकल स्वावलम्बी होने के मौकों का निर्माण हुआ। आर्थिक विकास के नए क्षेत्र स्त्री के लिए खुल गए, उसके लिए नए कानूनों, आरक्षणों का निर्माण हुआ जिससे उसे आगे बढ़ते रहने के रास्ते प्रशस्त हुए। उसकी राजनीतिक सक्रियता की उम्मीदें भी जगीं। मृदुला गर्ग अपने एक आलेख जो कि हंस (1999 जनवरी) में छपा था में लिखती हैं– स्त्री रचनाकारों ने भी अपनी रचनाओं में सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्थाओं की विसंगतियों के साथ स्त्री के शोषण, आत्मसंघर्ष, बाजार, मुनाफे की मानसिकता, अधिकार और जागरूकता को मुख्य मुद्दा बनाया है। समग्रतः कहें तो सांस्कृतिक सत्तावाद की पहचान की है। वे उन सभी स्थितियों और विकास से असन्तुष्ट हैं जो सामान्य मानव तथा स्त्री का विशिष्ट रूप से अवमूल्यन करते हैं। उनका साहित्य सांस्कृतिक सत्तावाद से मुक्ति का साहित्य है। इस प्रकार सभी स्त्री रचनाकारों ने स्त्री साहित्य के विकास से अनेक मुद्दों को जोड़कर उसे सार्थक किया। उन्होंने अब तक अवहेलित मुद्दों को साहित्य और विचार के केन्द्र में उपस्थित कर वैचारिक प्रतिबद्धता और संचेतना को सुदृढ़

किया। उन्होंने विकासशील समाज में स्त्री अस्तित्व के प्रश्नों और समस्याओं को उठाकर घरेलू राजनीति और परिवार में शक्ति विमर्श के पहलुओं को उजागर किया। स्त्री स्वावलम्बन के लिये वे बड़ी संख्या में सामनें आईं जिनमें प्रभा खेतान, मैत्रीय पुष्पा, प्रभा सक्सेना, उषा यादव, मीना शर्मा, अन्नपूर्णा, गीतांजलि श्री, मधू भादुड़ी, मधू रघुवंशी, मानवी, विमल गुप्ता, इंदिरा दीवान, नमिता सिंह, पद्मा सचदेव, पंखुरी सिन्हा, वंदना राग, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्रा, शर्मिला बोहरा जालान, कविता, अर्चना वर्मा, सरयू शर्मा, सारा रॉय, संजना कौल, जया जादवानी, सुरभि पाण्डे, अलका सरावगी, तेजी ग्रोवर, क्षमा शर्मा, नीलाक्षी सिंह, प्रत्युषा, कविता इत्यादि प्रमुख है।

पितृसत्तात्मक समाज का वह भाग जहाँ नाते, प्रतिष्ठा, मर्यादा, भावना, शर्म, हया, मान लज्जा, इज्जत सभी को स्त्री के खाते में डालकर भय और असुरक्षा का परिवेश निर्मित किया जाता है ये सभी उस व्यवस्था के विरूद्ध डटी हुई हैं और वैचारिक क्रांति का आव्हान करती हैं, स्वावलम्बी स्त्री छवि के जरिये स्त्री कथाकारों ने स्त्री चिंतन व उसके नवीन बोध की अलख जगाती हैं। साहित्य के जरिये सामने आई नई स्त्री का स्वरूप आधुनिक, भोगवादी, आत्मनिर्भर, अहं से युक्त, विद्रोहिणी किंतु सचेत और आत्म केन्द्रित है। परिवार एवं समाज के समक्ष तीखे तेवर के साथ अपने हितों और अधिकारों के पक्ष में स्त्री पूर्णतः सजग और मुखरित है। स्त्री का स्वावलम्बन समाज का भी सम्बल बनता जा रहा है, हमारा मनुवादी समाज दबे–ढ़ंके शब्दों की स्त्री विरोधी फुस्फुसाहट भले ही करता रहे मगर स्त्री स्वावलम्बन के उचित अर्थ और सामाजिक हित उसे भी समझ में आने लगे हैं। स्त्री इतनी सशक्त तो हो ही गई है कि इस सामन्ती समाज के पुण्य और पाप की परिभाषा को नये ढंग से गढ़ने में उसे अब झिझक नहीं होती बल्कि वो चुनौती देती ही नजर आती है। स्वावलम्बी स्त्रियाँ बौद्धिक, समर्थ, दक्ष और शक्तिशाली बन सड़क से संसद तक अपनी आवाज बुलंदी के साथ प्रस्तुत हो रही हैं, जिससे उनका उर्ध्वमुखी विकास सतत् हो रहा है।

मैत्रेयी पुष्पा अपनी इन नई स्त्री छबियों के बारे में लिखती हैं– ये आधी दुनिया के बाशिंदे सम्यक दृष्टि और नैतिक आजादी की दावेदारी करने लगे हैं, कि प्रजातंत्र को लोकतंत्र के रूप में देखना सीख गए है। स्त्री अपनी नई भूमिकाओं को सहज रूप में जी रही है, उसने चुनौतियों में सहज होना सीखा है, जिससे वह अपने स्वर को नई अभिव्यक्ति दे पा रही है उसके सभी नए रूप उसे नायिका के रूप में स्थापित करते हैं।

❖❖❖

सफलता का एक सूत्र आत्मविश्वास

❐ : रमेश चंद्र बादल

जीवन में आगे बढ़ने, उन्नति के शिखर पर पहुंचने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की चाहत रहती है। यह चाहत स्वाभाविक है। उन्नति के लिए अनेक गुणों का होना आवश्यक होता है जैसे – योग्यता, निपुणता, कठोर परिश्रम, अच्छा व्यवहार, मधुरवाणी, उमंग, उत्साह, आशावादी सोच और आत्मविश्वास ।

इन गुणों में आत्मविश्वास होना प्रमुख गुण माना जाता है। आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास या खुद पर भरोसा करना। आत्मविश्वास को सफलता की चाबी कहा गया है जिससे आप अपने शानदार भविष्य का द्वार आसानी से खोल सकते हैं। बिना आत्मविश्वास के कोई व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता है। जिस व्यक्ति को खुद पर विश्वास नहीं है उस पर दूसरा व्यक्ति भी क्यों विश्वास करेगा?

आत्मविश्वास को सफलता का मूलमंत्र भी कहा गया है। इस विषय में कुछ महापुरुषों के कथन –

- **आत्मविश्वास सफलता काप्रथम रहस्य है। – एमर्सन**
- **आत्मविश्वास का और आशा ही वे वस्तुएं हैं जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं। – स्वेट मार्डेन**
- **आत्मविश्वास शरीर में रुधिर की तरह होता है। जिस प्रकार बिना रुधिर के शरीर जिंदा नहीं रह सकता उसी प्रकार बिना आत्मविश्वास के कोई भी सफल नहीं हो सकता। – अज्ञात**

संस्कृत में सूक्ति है विश्वासों फलदायकः अर्थात् आत्मविश्वास से सफलता मिलती है।

श्री रामकृष्ण परमहंस ने कहा है – जिसके पास विश्वास है उसके पास सब कुछ है, और जिसके पास विश्वास नहीं है उसके पास कुछ भी नहीं है। अपने विश्वास को मन में जगाएं और उसे बार– बार दोहराएं। इससे आपके साहस में वृद्धि होगी। साहस ही आत्मविश्वास की रीढ़ है। मैं इस लक्ष्य को अवश्य ही पूरा करूंगा क्योंकि मैंने विश्वास से उसका निर्धारण किया है और फिर संकल्प लिया है तब इससे न केवल आपका साहस बढ़ेगा बल्कि आत्मविश्वास की शक्ति में भी प्रबलता बढ़ेगी।

जिसे अपने आप पर विश्वास नहीं उसकी असफलता निश्चित है। – नेपोलियन

यह आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो । – गोर्की

किसी महान उत्तरदायित्व के लिए आत्मविश्वास प्रथम आवश्यकता है। – सेम्यूल जॉनसन

Confidence is the companion of success-
As is our confidence, so is our capacity-

विश्वासी दो प्रकार का होता है पहली सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक। सकारात्मक विश्वास का मित्र कहा गया है – जैसे मैं यह कार्य कर सकता हूं और सफलता प्राप्त करूंगा। नकारात्मक विश्वास मैं क्या कर सकता हूं? अपने आपको दीनहीन और बूढ़ा समझना। जो लोग अपने आपको बूढ़ा समझने लगते हैं, उनमें बुढ़ापे के लक्षण भी जल्दी दिखाई देने लगते हैं।

कविवर सुमित्रानंदन पंत की एक कविता है सुंदर विश्वासों से ही बनता सुंदर जीवन किसी कार्य को कर पाना या न कर पाना व्यक्ति के अपने आत्मविश्वास पर ही निर्भर करता है। जिनका विश्वास सुंदर है उनका जीवन भी सुंदर बनता है।

जिनका विश्वास असुंदर है उनका जीवन असुंदर बनेगा। इसलिए हमेशा अपने विश्वास को सकारात्मक ही रखना चाहिए। हमेशा सफलता पाने की आशा करना चाहिए। हम होंगे कामयाब यह मंत्र हमेशा स्मरण रखिए। सफलता के लिए यह मंत्र महत्वपूर्ण है। प्रत्येक परिस्थिति में अपना मनोबल आत्म विश्वास कम न होने दें। जीवन में तो अच्छे और बुरे सभी प्रकार के अवसर आते हैं और आते रहेंगे। इसलिए अपना आत्मविश्वास हमेशा मजबूत रखें। हमेशा स्मरण रहे कि खुद पर भरोसा करना ही आपकी सफलता का पहला कदम होता है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि जिस मनुष्य में आत्मविश्वास नहीं होता वह बलवान होकर भी डरपोक है, और विद्वान होकर भी मूर्ख है। अर्थात् अगर उसमें आत्मविश्वास न हो तो सफलता उससे हमेशा दूर रहती है। इसलिए किसी भी हालत में आत्मविश्वास कम न होने दें। सभी शक्तियां आपके भीतर हैं, आप सब कर सकते हैं। इस बात पर विश्वास करें।

अपनी शक्ति पर संदेह नहीं विश्वास करो वृक्ष की शाखा पर बैठे पक्षी आंधी, वर्षों में शाखा टूटने का डर नहीं होता क्योंकि उसका भरोसा तो अपने पंखों पर होता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को अपनी शक्ति पर विश्वास करना चाहिए। अपनी शक्ति पर संदेह करने की सोच अच्छी नहीं है। अपनी शक्ति पर भरोसा करने से शक्ति मजबूत बनती है इसलिए हमेशा आत्मविश्वास रखें कि आप पूर्ण सक्षम हैं और आप सभी कार्य कर सकते हैं।

आचार्य श्री राम शर्मा ने कहा है– संसार के समस्त अग्रणी लोग आत्मविश्वासी वर्ग के होते हैं। अपनी आत्मा में, अपनी शक्तियों में आस्थावान रहकर कोई भी कार्य कर सकने का साहस रखते हैं और जब भी जो भी कार्य अपने लिए चुनते हैं, पूरे संकल्प और पूरी लगन के साथ उसे पूरा करके छोड़ते हैं। आत्मविश्वासी सराहनीय कर्मवीर होता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल होने के लिए आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। अच्छे से अच्छा तैराक भी आत्मविश्वास के अभाव में किसी नदी को पार नहीं कर सकता। हम अमुक कार्य अवश्य कर सकते हैं। इस विचार में बड़ी अद्भुत शक्ति भरी हुई है। संसार में जो मनुष्य बड़े–बड़े काम करते हैं, उन सब में ऊंचे दरजे का आत्मविश्वास होता है। आत्म विश्वास में वह ताकत है जो हजार विपत्तियों का सामना कर उन पर पूरी–पूरी विजय प्राप्त कर सकती है। संसार में सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा के साथ अपनी योग्यताओं में वृद्धि करना भी आरंभ कीजिए। अपने भाग्य को जैसा चाहें वैसा लिखना अपने हाथ की बात है। (सफल जीवन की दिशा धारा से उद्धृत)।

अंग्रेजी की एक कविता का भाव है यदि आपने मान लिया कि हार जाएंगे तो निश्चय ही हार जाएंगे। सफलता उन्हें मिलती है जो यह निश्चय करके चलते हैं कि सफलता उन्हें मिल कर रहेगी। सफलता का मूल है आत्मविश्वास। इसलिए अपने आत्मविश्वास को किसी भी दशा में कमजोर न होनेदें। आत्मविश्वास ही जीवन है और संदेह करना मृत्यु माना गया है। जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास हो उसे सफलता पाने से कोई रोक नहीं सकता।

अपनी क्षमता शक्ति और परिश्रम पर विश्वास रखिए। संशय–संदेह करना, दुविधा में रहना, असमंजस में मत रहिए। इनको आत्मविश्वास का शत्रु कहा गया है। संस्कृत में कहा गया है – संशयात्मा विनश्यति अर्थात संशय किया और विनाश हुआ। संशय में बने रहना और उसे दूर न करना अच्छा नहीं। संशय में बने रहने वाला व्यक्ति कोई एक निश्चय नहीं कर पाता।

सारांश लेख का सारांश यह है कि जीवन में सभी प्रकार की परिस्थितियों का मनुष्य को सामना करना पड़ता है। अच्छी और बुरी परिस्थितियां हमेशा नहीं रहती। इसलिए जब भी बुरी अप्रिय परिस्थितियां उत्पन्न हों तो बहादुरी के साथ उनका सामना करिए। धैर्य रखें। बुरा समय गुजर जाने दीजिए।

अपना आत्मविश्वास मजबूत रखें। बुजुर्गों से खुलकर अपनी समस्या के विषय में बातचीत करें। उनका मार्गदर्शन लेने में संकोच न करें। उनके अनुभव का लाभ प्राप्त करना चाहिए। महापुरूषों के जीवन चरित्र पढ़े।

आर्थर एस. टेनिस खिलाड़ी का कथन – सफलता की महत्वपूर्ण कुंजी आत्मविश्वास और आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण कुंजी है तैयारी। इसलिए प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार रहिए। स्वयं का आत्मविश्वास कम न होने दें। गौतम बुद्ध, ईसामसीह, गांधी ने अपने विश्वास से ही दुनिया को बदल दिया। यदि आपका आत्मविश्वास पक्का है तो कोई शारीरिक अक्षमता भी आपको पीछे नहीं कर सकती। महान काव्य रचयिता मिल्टन अंधे थे।

महान संगीतकार विथोविसन बहरे थे। रूजबेल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति चल फिर नहीं सकते थे फिर भी वे अपने अदम्य साहस और आत्मविश्वास के कारण विश्व प्रसिद्ध हुए।

❖❖❖

संस्कृति का आधार पर्व उत्सव और त्यौहार

❐ : ज्योति चेड़े, पवई, मंबई

किसी भी देश की संस्कृति में त्यौहारों का विशेष महत्व होता है। देश के लोग त्यौहार कई सदियों से मनाते आये हैं। हमारी भारतीय संस्कृति तो सनातन संस्कृति मानी जाती है। सनातन का अर्थ है, शाश्वत लेकिन नित नवीन इसलिये कई सदियों से हमारी संस्कृति और त्यौहार वैसे ही मूल रूप में मनाये जाते हैं और कुछ परिवर्तन के साथ भी।

हमारे भारतीय संस्कृति में हर पहलू आध्यात्मिक आधार के ऊपर निर्धारित है। इस संस्कृति की नींव हमारे ऋषि मुनियों ने रखी थी, जो ज्ञनी अध्यात्म विद्या से पूर्ण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले थे। यही दृष्टिकोण उन्होंने त्यौहार मनाने के तरीका खोजकर रखा इसलिए उनके बनाये हुये तरीकों से ही आज भी हम वह त्यौहार मनाते हैं।

हमारे यहां जो उत्सव, त्यौहार मनाते हैं वे चंद्रगति पर आधारित थे। इसलिये हमारी काल गणना में चांद और सौर पद्धति का मेल है, इसलिये हमारा हरेक त्यौहार इसी ऋतु में साल दर साल आता है।

भारतीय पंचाग में छः ऋतु हैं और बारह महीने। हरेक ऋतु दो महीने का होता है। भारतीय वर्ष चैत्र महीने से आरंभ होता है। हमारे ऋतु और महीने इस प्रकार हैं: चैत्र, वैशाख (बसंत ऋतु), जेष्ठ, आषाढ़ (ग्रीष्म ऋतु), श्रवण भाद्रपद (वर्षा ऋतु), आश्विन, कार्तिक (शरद ऋतु) मार्गशीर्ष, पौष (हेमंत ऋतु), माघ, फाल्गुन (शिशिर ऋतु)।

भारत जैसे विशाल देश में भौगोलिक भिन्नता के अनुसार त्यौहार मनाने के तरीकों में फर्क दिखाई दे सकता है। त्यौहार मनाने में, त्यौहार से जुड़े रीति–रिवाज, खान–पान इसमें कुछ कुछ अंतर हो सकता है, पर त्यौहार मनाने के पीछे के तत्व कारण, उत्साह, आनंद काश्मीर से कन्याकुमारी तक गुजरात से बांगला तक लगभग एक सा हैं।

भारतीय वर्ष का पहला ऋतु बसंत और पहला महीना चैत्र होता है। नये साल का आरंभ चैत्र और ऋतु बसंत ऐसा सुहाना मौसम, न अति शीत न अति गरमी। निसर्ग राज भी अपनी पूरी सुंदरता पृथ्वी पर उड़ेलते हुए अपनी चरम सीमा पर होता है और चैत्र का पहला दिन नववर्ष के रूप में कई प्रदेशों में मनाया जाता है। चैत्र शुद्ध प्रतिपदा महाराष्ट्र में गुड़ीपड़वा कर्नाटक आंध्रप्रदेश में युगादी के नाम से जानी जाती है।

ब्रह्म पुराण के अनुसार भगवान ब्रह्माजी ने इसी दिन विश्व का निर्माण किया था। इस दिन नीम के पत्ते का प्रसाद के रूप में खाने का रिवाज है। नीम का वृक्ष सदाहरित, सदापर्णी होता है। नीम के वृक्ष का हरेक हिस्सा औषधी युक्त होता है। इसे पत्ते, फूल और बौर खाने से कई बीमारियां दूर होती हैं। आगे गरमी शुरू होने वाली होती है नीम के फूल, पत्ते इत्यादि खाने से गरमी की कई समस्या नैसर्गिक पद्धति से दूर होती हैं।

चैत्र शुद्ध नवमी को भगवान राम का जन्म दिवस होता है। इसे रामनवमी बोलते हैं। त्रेता युग में जन्में श्री राम भारतीय के मनपटल पर कई युगों से पूजे जाते हैं। हरेक भारतीय के हृदय पर दशरथनंदन राम आदर्श पुत्र, भाई, आदर्श पति, आदर्श राजा के रूप में विराजमान है। भारत के हर एक कोने में राम जन्म का उत्सव मनाया जाता है। प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन उपास, रामायण पाठ, परायण, व्रत, भजन कीर्तन होता है।

भारतीय संस्कृति में आदर्शों का आदर करना उन्हें अपनाने का प्रयास करना इसे व्रत की तरह मानते हैं। रामनवमी का उत्सव मनाना यह एक व्रत परंपरा कई सदियों से चली आयी है।

भगवान राम के परम भक्त वायु पुत्र हनुमान का जन्मोत्सव भी चैत्र के पूर्णिमा को मनाते हैं। भगवान और भक्त का जन्म एक ही महीने में होने से दिन के अंतराल से आना, यह दोनों के प्रति संबंध को दर्शाते हैं। इस दिन वह फल जिसमें पानी की मात्रा अधिक है वे हनुमानजी को भोग के रूप में चढ़ाते हैं।

बसंत ऋतु के वैशाख महीने में एक महत्वपूर्ण पर्व आता है। ये अक्षय तृतीया का दिन है अक्षय तृतीया का दिन त्रेता युग का आरंभ दिन भी माना जाता है। इसी दिन भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम का जन्म हुआ था।

अक्षय तृतीया साड़े तीन मुहुर्तो में से एक पूर्ण मुहुर्त है। इसी दिन कोई भी पवित्र संकल्प काम प्रारंभ करना शुभ माना जाता है। भारत के कई प्रांतों में इसे चंदन उत्सव भी कहते हैं। चंदन, सुगंधी, शीतलता देने वाले तेल इत्र आदि को भगवान को अर्पण करते हैं परिजनों को यह इत्र चंदन भेंट किया जाता है वैशाख की कड़ी गरमी में 'चंदन उत्सव' मनाना यह हमारे पूर्वजों की बुद्धिमत्ता का द्योतक है।

ग्रीष्म ऋतु के जेष्ठ महीने से वह सावित्री व्रत मनाते हैं। सत्यवान सावित्री की कथा सबको पता ही है। आज चाहे महिला समानता की बात करने वाला एक वर्ग यह व्रत की आलोचना करे पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और आयुर्वेद के ज्ञान के अनुसार वटवृक्ष बुद्धि और आरोग्य देने वाला होता है। वटवृक्ष के इर्दगिर्द रहने से आरोग्य आक्षुण्य के लिये उपयुक्त होता है। इसे धार्मिक संदर्भ देकर हमारे ऋषिमुनि महिलाओं को वटवृक्ष के आसपास रहने की सलाह देते हैं।

इसी ऋतु में आषाढ़ महीने में आने वाला और पूरे भारतवर्ष में मनाया जाने वाला पर्व है गुरूपूर्णिमा। आषाढ़ महीने की पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा कहते हैं। इसी दिन श्री वेद व्यास जी का जन्म हुआ था। गुरूओं के गुरूश्री कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास अपनी अलौकिक बुद्धिमत्ता के लिये जाने जाते हैं। 16 पुराण, उपपुराण, महाभारत के रचियता व्यासजी और अपने गुरूओं के प्रति आदर सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करने का त्यौहार है गुरूपूर्णिमा। वर्षा ऋतु के श्रवण–भाद्रपद महीने त्यौहार भरपूर हैं। श्रवण महीना तो त्यौहारों का राजा महीना माना जाता है। नागपंचमी, श्रवण का पहिला पक्षी में भगवान तत्व देखते हैं। अभी भी भारत कृषि प्रधान देश माना जाता है। वर्षों में जो जो प्राणी कृषिवल में सहायक होते हैं उनमें एक है सर्च धान्य को नष्ट करने वाले चूहों को खाने वाला सर्प, किसानों के लिये वरदान का रूप ही है। उसके प्रति कृतज्ञता जताने के लिये नागपंचमी मनायी जाती है। प्रतीक के रूप में नागों को रक्षा और पूजन किया जाता है।

श्रावण महीना भगवान शिव का अत्यंत प्रिय महीना है। पूरे महीने में शिव को पूजा अर्चना, शिवजी के पोथी ग्रंथ पड़े जाते हैं। व्रत, उपवास, जप तप, भजन कीर्तन बड़े श्रद्धा के साथ करते हैं।

भाई बहन के प्यार के प्रतीक के रूप में रक्षाबंधन का त्यौहार हर प्रांत में बड़े प्रेमपूर्वक मनाते हैं। निःस्वार्थ, निरामय, निरपेक्ष प्रेम भाई और बहन के रिश्ते के अलावा कहीं भी नहीं मिलता। भाई और बहन जिस रिश्ते में बंधे होते हैं, जो समय उन्होंने उनके बचपन के निष्पाप मन से बिताया, बड़े होने पर दोनों ही अपनी दुनिया में व्यस्तता के कारण साथ मिल नहीं पाते, उसी निष्कपट प्रेम को दुबारा

जीने का त्यौहार है रक्षाबंधन। इस ऋतु में वर्षा के कारण मनुष्य की शारीरिक हलचल कम हो जाती है। इसलिये वर्षा ऋतु में आहार, खानपान, रोज का काम यह ध्यान में रखकर हमारे को उपवास, हलका, पचने वाला आहार लेने की सलाह दी।

श्रावण में आने वाला महत्वपूर्ण उत्सव है श्री कृष्ण जन्माष्टमी। श्रावण के अष्टमी को भगवान श्री कृष्ण इस धरती पर अवतरित हुए। इसे जन्माष्टमी, गोकुलाष्टमी, कालाष्टमी भी कहते हैं। हम भारतीयों को कृष्ण अत्यंत प्रिय है। द्वापर युग में जन्में पूर्वावतार कृष्ण भगवान ने धर्म संस्थापनार्थाय अवतार लिया था। पूरे भारत में जन्माष्टमी मनाई जाती है, जन्माष्टमी मनाने के तरीके कुछ अलग–अलग हों पर कृष्णभक्ति, कृष्ण प्रेम, पूरे भारत भर में एक जैसा ही पाया जाता है। वही उत्साह, वही उमंग। कहीं झूले, झूले जाते हैं, कहीं दही हांडी फोड़ी जाती है, कहीं कृष्ण के जीवन पर झांकिया बनाई जाती हैं। कृष्ण जन्म के समय भारत की हर नारी माँ यशोदा बन जाती है तो हर पुरुष नंदलाला। त्यौहारों की यही विशेषता है सब एक होकर खुशियां मनायें।

वर्षा ऋतु दूसरा महीना है भाद्रपद। इस महीने में आने वाला उत्सव है गणेश उत्सव गणेश प्रथम वंदिता देवता है। किसी भी कार्य की शुरूआत गणेश पूजन से होती है। कुछ साल पहले गणेश पूजा अपने अपने घर में ही मनाई जाती थी। महाराष्ट्र के एक द्रष्टा लोकमान्य तिलक जी ने इस गणेश पूजा को सार्वजनिक गणेश उत्सव का रूप दिया। समाज के हर स्तर के लोग एकत्र हुए। विचारों का आदान–प्रदान हो, नई पीढ़ी को सामूहिक रूप से मिलजुलकर काम करने की शिक्षा मिले ये प्रमुख उद्देश्य था। सब स्तर के सब उमर के लोग अपना मनमुटाव भुलाकर उस गणेश की आराधना करते हैं। आज सिर्फ महाराष्ट्र में ही नहीं सारे देश में सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाया जाता है।

व्यक्तिगत तौर पर कुछ प्रदेशों में एक छोटा सा उद्देश्यपूर्ण त्यौहार इसी महीने में आता है। वह है। 'ऋषिपंचमी' हमारे ऋषि जो हमारे लिये ज्ञान, संस्कृति, ग्रंथ छोड़ गये उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है ऋषिपंचमी। महालय श्राद्ध के दिनों में हमारे पूर्वज, जिनकी वजह से हमें ये शरीर और जीवन मिला है। उनको याद करते हैं। प्रतीक के रूप में उन्हें खाना खिलाते हैं। दान करते हैं हमारे दिवंगत उनका आशीर्वाद और कृपा हमारे बच्चों पर रहे इस विचार से उनका श्राद्ध किया जाता है। भाद्रपद के बाद शरद ऋतु का आगमन होता है। यह एक सुहाना ऋतु होता है। बरसात लगभग वापसी के रास्ते होता है जिसमें हर ओर हरियाली छायी होती है। ऐसे में लोग उल्लास के साथ मनाते हैं नवरात्रि।

नवरात्रि मनाना मतलब दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती इन देवियों की स्त्री शक्ति की पूजा। नवरात्री का उत्सव भी भारत के हर कोने में मनाया जाता है। उत्तर में, रामलीला का मंचन राम जी के जीवन पर झाँकियां निकालना, देवी की स्थापना कर पूजा अर्चना निवेदन करना है। ये कार्यक्रम होते हैं तो पूर्व में माँ काली, माँ सरस्वती की आराधना होती है। राम पश्चिम से गुजरात में गरबा की धूमधाम होती है तो दक्षिण में माँ के अनेक रूपों की पूजा होती है। इन नौ दिनों में सामूहिक कार्यक्रम एक दूसरे से मेलमिलाप करना ये उद्देश्य रखकर उत्सव मनाते हैं।

नवरात्रि की सम्पूर्ण समाप्ति दशहरे के त्यौहार से होती है। श्रीराम भगवान ने रावण को युद्ध में पराजित इसी दिन किया था। सत्य की असत्य पर विजय, अपवित्रता का नाश और पवित्रता का उदय ही दशहरा त्यौहार की सीख है। रावण की विशाल, मजबूत और प्रचंड सेना को वानरों की सेना ने, जिसके शस्त्र थे उनके नाखून और दांत से पराजित किया। भक्ति की शक्ति पर विजय इसका प्रतीक है दशहरा या विजयादशमी।

दशहरे को भारत भर में रावण का दशमुखी पुतला जलाये जाने की प्रथा है। कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो अहंकार के कारण वह जलकर राख ही होता है ये संदेश विजयादशमी के दिन हर मानव के दिल में पहुंचता है।

अश्विन महीना तो दीपावली का महीना होता है। दीपावली के पांच दिनों में इतिहास से इतनी सारी कथायें बताई जाती हैं। दीपावली भारत का सबसे बड़ा और लोकप्रिय त्यौहार है। इन दिनों भारत का किसान अपनी खेतों के कामों से मुक्त होता है। उसकी कष्ट से भरी जिन्दगी का थोड़ा सुकून सुख मिलने का त्यौहार है दीपावली।

वैसे तो दीपावली प्रकाशपर्व है। अश्विन की अमावस्या को दीपावली मनाते हैं। लक्ष्मी माँ की आराधना करके संपत्ति, धन, शांति की प्रार्थना करते हैं। इसी दिन श्रीरामजी अयोध्या लौटे थे। इन्हीं दिनों श्री कृष्ण भगवान ने नरकासुर को मारकर 16 हजार कन्यायें जिन्हें इस राक्षस ने कैद करके रखा था उन्हें स्वतंत्र किया। इन्हीं दिनों राजा बली ने श्री भगवान विष्णु के पांचवें

अवतार वामन भगवान को पृथ्वी, स्वर्ग का राज्य दान में दिया और एक दिन के लिये पृथ्वी पर आते रहने की अनुमति मांगी। इसी दिन गुजरात का और व्यापारियों का नया साल शुरू होता है। सिक्खों का पवित्र स्थान अमृतसर में बना स्वर्णमंदिर का ये स्थापना दिन है।

गौवर्धन पूजा अन्नकूट इस दिन होती है। भैयादूज या यमद्वितीया भी दीपावली के तीसरे दिन मनाते हैं। भाई–बहन के प्यार का प्रतीक भैयादूज है। पुराणों के संदर्भ में मृत्युदेवता यम इस दिन अपनी बहन यमी के घर मिलने के लिए जाते हैं।

दीपावली के पांच दिनों में संयोग से पुराण शास्त्र इतिहास की शुभ और महत्वपूर्ण घटनाओं का एकत्रीकरण हुआ है। तो ये त्यौहार पूरे भारतवर्ष में धूमधाम श्रद्धा से मनाया जाता है इसमें आश्चर्य क्या? हर वर्ग के लोग बड़े छोटे बच्चे पंडित, ज्ञानी हर अपनी अपनी नजर से दीपावली को देखते हैं। बच्चों के लिये नये कपड़े, मिठाई, फटाके याने दीपावली है, तो बड़ों के लिये मेलजोल, आपसी प्यार का प्रतीक दीवाली है।

इसके बाद हेमंत ऋतु मार्गशीर्ष और पौष आते हैं। मार्गशीर्ष महीने में आने वाला पर्व है। दत्त जयंती अनसुईया और अत्री पुत्र त्रिदेव दत्त भगवान का जन्मदिवस मार्गशीर्ष पौर्णिम को मनाया जाता है। भगवान दत्तात्रय का महत्वपूर्ण पहलू ये है वे खुद भगवत स्वरूप हैं फिर भी उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने के लिये जमींन, आकाश, समाज में रहने वाली 24 गुरूओं का आश्रय लिया। इनकी 24 गुरूओं की गाथा प्रसिद्ध है।

मार्गशीर्ष महीना श्रीकृष्णजी को बहुत प्यारा है। भगवत गीता में उन्होंने इस महीने का उल्लेख किया है। श्रीमद् भगवतगीता के 10 अध्याय विभूति योग में भगवान कहते हैं–

'मासानां मार्गशीर्षो अहम्' (श्लोक 35)

हेमंत ऋतु के पौष महीने में मकर संक्रांति का पर्व आता है। सूर्य मकर राशि में प्रवेश इसी दिन करता है। मकर संक्रांति से सर्दी कम होकर गरमी की शुरूआत होती है। सूर्य उत्तर आयान में प्रवेश करता है। ये त्यौहार गुजरात उतराण के रूप में महाराष्ट्र, आंध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक में मयूर संक्रांत के रूप में मनाया जाता है इसे पतंग उत्सव भी कहते हैं। मकर संक्रंति ऐसा एक ही त्यौहार जो अंग्रेजी कालगणना के दिन के अनुसार 14 जनवरी को ही आता है। शिशिर ऋतु भारतीय कालगणना वर्ष का आखिरी ऋतु है। इसमें माघ फाल्गुन ये दो महीने आते हैं। माघ महीने में महाशिवरात्रि का महत्वपूर्ण उत्सव आता है।भगवान शिव त्रिमूर्ति, ब्रम्हा, विष्णु, महेश में से एक संहारदाता है। वैसे तो शिवरात्रि हर महीने में आती है पर माघ महीने की शिवरात्रि, महाशिवरात्रि भगवान शिव को अर्पित है। यह दिन भगवान शिव और पार्वती का विवाह दिन माना जाता है। पूरे भारत भर के कोने–कोने में ये पर्व श्रद्धा उत्साह के साथ मनाते हैं। भजन, जपतप, उपवास, कीर्तन, पूजा अर्चना हर शिव मंदिर में होती है। शिवजी योगी और तपस्वी के गुणों के देवता माने जाते हैं। किंचित भक्ति से प्रसन्न होने वाले, परित्यक्त पीड़ित समाज को अपनाने वाले। श्मशान वासी शंकर की शरण जाकर जपतप का उत्सव है महाशिवरात्रि। वर्ष का अंतिम महीना है फाल्गुन। फाल्गुन, फागुन याने होली ये मानों समीकरण हो गया है। फाल्गुन महीने की पौर्णिमा को होली का दहन का उत्सव होता है।

हिरण्यकश्यप की बहन होलीका बालक प्रल्हाद को जलाने के प्रयास में खुद जलकर राख हो गयी। इसी क्रूरता पर भक्ति की विजय हो इस तैयारी की सीख है। लकड़ियां घास, उपले को इकट्ठा कर इसे राक्षसी होलीका मानकर इसका दहन किया जाता है। हो ली के दूसरे दिन उत्साह उमंग का त्यौहार, रंगों का त्यौहार धुलीवंदन, रंगपंचमी, घुलवर ऐसे नामों से जाना जाता है। होली और कृष्ण भगवान दोनों हो एक दूसरे से जुड़े हैं। कृष्णभगवान को गोपियों के संग, गोकुलवासियों के संग रंग खेलना हर भारतीयों के मन को लुभाना। कई पीढ़ियों से संत, साधु, कवि, लेखक, संगीत गाने जानने वाले कृष्ण की होली वर्णन करते नहीं थकते। कृष्ण रंगों के रंग से इतिहास के अगणित पृष्ठ रंगे हैं।

कथा, कविता, गीत, संगीत से रसमय होने वाला कलाकार, कृष्ण होली का सादरीकरण किये बिना अपने आप को अधूरा मानता है। गोकुल वृंदावन की होली बरसाने की लड्डमार होली राजस्थान, गुजरात की रंग बिरंगी होली इन सबने हमारे सांस्कृतिक पहलू को चार चांद लगाये हैं। इनके अलावा हमारे राष्ट्रीय त्यौहार है महापुरुषों जन्मदिन है कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय घटनाओं के घटे हुये दिन ये भी त्यौहार के रूप में भारत में मनाये जाते हैं। कुल मिलाकर हम भारतीय वर्ष के 365 दिन रोज कोई ना कोई त्यौहार मानते हैं ये कहना अतिश्योक्ति न होगी।

❖❖❖

धनतेरस नरक चतुर्दशी और दीपावली

❑ : पी. अंजलि वर्मा

भारत के सभी त्यौहार बहुत ही कल्याणकारी हैं। इनके मनाने के पीछे बहुत ही अलौकिक और उच्च आध्यात्मिक रहस्य छिपे हैं परंतु आज के मनुष्य इनके अलौकिक अर्थ को न लेकर लौकिक रीति से ही इन्हें मनाते हैं इसलिए उन्हें अलौकिक सुख की अनुभूति नहीं होती और उनकी आत्मिक स्थिति भी उच्च नहीं बनती। दीपावली और इससे संबंधित पर्वों को मनाने के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। दीपावली का त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि को मनाया जाता है। दीपावली से दो दिन पूर्व धन–तेरस और एक दिन पूर्व यम चतुर्दशी मनाई जाती है। यम चतुर्दशी को ही नरक चतुर्दशी भी कहते हैं। दीपावली शब्द का लौकिक अर्थ (दीपों की पंक्ति) लेकर हर वर्ष इस दिन मिट्टी के दीपक जलाते अथवा बिजली की रोशनी से घरों को सजाते हैं। वास्तव में दीपावली शब्द लौकिक दीपमाला का नहीं बल्कि आत्मा रूपी दीपक जगाने का सूचक है। यह सत्यता दीपावली और इससे संबंधित पर्वों के बारे में प्रचलित आख्यानों, किवदन्तियों पर विचार करने से स्पष्ट समझी जा सकती है।

धन–तेरस

धन तेरस के बारे में दन्त–कथा है, एक बार यमराज ने अपने दूतों से पूछा कि जब आप प्राणियों के प्राण हरने जाते हैं तो उस समय आपको दया आती है या नहीं? यमदूतों ने कहा, महाराज, जब अकाल मृत्यु होती है, तब हमें अवश्य ही दया आती है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए यमदूतों ने एक वृत्तांत सुनाया, यमराज एक बार एक राजा शिकार करते–करते किसी अन्य राज्य में चला गया। वहाँ के राजा ने उसका आदर–सत्कार किया। सत्कार करने वाले राजा के यहां उसी दिन एक पुत्र पैदा हुआ परंतु आकाशवाणी हुई कि तुम्हारा वह पुत्र विवाह के चार दिन बाद मर जाएगा। इस बात से दोनों राजाओं को दुःख हुआ। दोनों ने उसे बचाने के अनेकानेक उपाय किये परंतु विवाह के ठीक चार दिन बाद हम (यमदूतों) ने उस पुत्र के प्राण हर लिए। इससे वहाँ खुशी की बजाय रोना–धोना शुरू हो गया। ऐसी असामयिक मृत्यु को देख कर हमें भी प्राणियों पर दया आती है। अतः हे यमराज, आप कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे प्राणी अकाल मृत्यु से उद्धार पा सके? यह सुनकर यमराज ने कहा कि जो प्राणी धन–तेरस के दिन धर्मशाला, मन्दिर, मठ, चौराहे आदि स्थानों पर दीपक जलायेगा अथवा दीपदान करेगा, उसकी असामयिक मृत्यु कभी नहीं होगी और वह धन–धान्य सम्पन्न होगा।

उपर्युक्त दन्त कथा पर विचार करने से स्पष्ट है कि आपका कोई लौकिक भाव नहीं हो सकता अर्थात् मिट्टी के दीपक जलाने मात्र से कोई मनुष्य यम के दण्ड अथवा अकाल मृत्यु से नहीं बच सकता क्योंकि अकाल मृत्यु का कारण मनुष्य का कर्म–भोग है। जब किसी शरीर द्वारा भोगे जाने वाले कर्म समाप्त हो जाते हैं तो आत्मा उस शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर ले लेती है। अब इस नए शरीर द्वारा उसका कर्म– भोग शुरू हो जाता है। वास्तव में जब मनुष्य

ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग द्वारा आत्मा रूपी दीपक जगाते हैं और मठ, मन्दिर, चौराहे, बावली आदि स्थानों पर एकत्रित अनेकानेक ईश्वर प्रेमियों को ज्ञान रूपी दीपक का दान देते हैं, तो वे भविष्य में यम की यातनाओं से तथा अकाल मृत्यु से छूट जाते हैं।

नरक चतुर्दशी

नरक चतुर्दशी अथवा यम चतुर्दशी के बारे में भी एक दन्त–कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि इसी दिन वामन अवतारधारी भगवान ने राजा बली की सारी पृथ्वी को तीन पैर में नाप लिया था। फिर उन्होंने राजा बली से वर मांगने को कहा। बली ने कहा, मुझे अपने लिए तो किसी वरदान की आकांक्षा नहीं है परंतु लोक–संग्रह के लिए यह पूछना चाहता हूँ कि यम की यातनाओं से छूटने का क्या साधन है? वामन ने कहा, मनुष्य को चाहिए कि वह इस दिन दीपक जलाए और दीपदान करे।इसी बात को लेकर आज तक लोग दीपावली के एक दिन पहले भी दीपक जलाते और दान करते हैं। धन– तेरस तथा नरक चतुर्दशी दोनों दिन दीपक जलाकर पितरों को भी मार्ग दिखाते हैं। जिसका पिता जीवित हो वह भी तर्पण कर सकता है। उपर्युक्त दन्त– कथा का संकेत भी ज्ञान प्रकाश करने अथवा योग रूपी दीपक दान करने की ओर है। स्थूल दीपक जलाने से भला पितरों का मार्ग कैसे प्रकाशित हो सकता है? जीते–जागते पिता के भविष्य के मार्ग को प्रकाशित करने के लिए तर्पण करने की बात भी योग रूपी दीपक–दान करने से ठीक सिद्ध हो सकते हैं वरना तो वह हास्यप्रद बन जाती है। मनुष्य योग–प्रकाश द्वारा ही जीवित और मृत दोनों प्रकार के संबंधियों का कल्याण कर सकता है। भारत के त्यौहारों की महानता है कि वे मनुष्य को न केवल अपने कल्याण के लिए बल्कि अपने मित्र संबंधियों तथा अन्य जनों के कल्याण के लिए भी प्रेरित करता है।

सोचने की बात है कि यदि धन– तेरस अथवा नरक चतुर्दशी के दिन दीपक जलाने मात्र से ही कोई यम के दण्ड से अथवा अकाल मृत्यु से छूट सकता तो फिर संसार में सत्संग, योग, सन्यास, ब्रह्मचर्य आदि–आदि साधनों की क्या आवश्यकता थी? स्पष्ट है कि दीपक–दान करने अथवा दीपक जगाने का कोई लौकिक अर्थ लेना भूल करना है। वास्तव में योग द्वारा आत्मा रूपी दीपक जगाकर अन्य अनेकानेक आत्माओं को भी ज्ञान तथा योग से प्रकाशित करना ही इसका सच्च्चा अर्थ है।

दीपावली

दीपावली के बारे में भी इसी तरह की एक किवदंती प्रचलित है। कहते हैं एक बार बली, जो कि असुर राजा था, की जेल में श्री लक्ष्मी जो सभी देवी–देवताओं सहित बन्धन में थी। दीपावली के दिन भगवान ने उन सबको बली की कैद से छुड़ाया था और बंधन मुक्त होकर सभी देवता श्री लक्ष्मी के साथ क्षीरसागर में चले गये थे। अतः जो लोग इस दिन दीपक जलाते हैं और श्री लक्ष्मी का आह्वान करते हैं, लक्ष्मी जो उनके घर में आवास करती है। उनके सर्व अनिष्ट समाप्त हो जाते हैं। किंचित विचार कीजिए कि क्या मिट्टी के दीपक जलाने मात्र से किसी व्यक्ति की सभी अनिष्टों से निवृत्ति हो सकती है? उनके घर में श्री लक्ष्मी का निवास हो सकता है? और वह धन–धान्य सम्पन्न हो सकता है? यदि ऐसा सम्भव होता

तब तो आज सभी भारतवासी धन–धान्य सम्पन्न होते और भारत देश मालामाल होता परंतु हम देख रहे हैं कि भारत अभी तक भी निर्धन देश है। दीपक जलाने मात्र से कोई धनवान बन जाता फिर तो मनुष्य कर्म छोड़कर, केवल दीपक जलाकर ही धन प्राप्ति का यत्न करते परंतु हम जानते हैं कि संसार में मनुष्य को अपने कर्मों ही का अच्छा या बुरा फल मिलता है और अच्छे कर्म करने के लिए ज्ञान–प्रकाश का होना अथवा आत्मा रूपी दीपक का जगा हुआ होना बहुत जरूरी है। वरना मनुष्य को यमराज का दण्ड भी भोगना पड़ता है और वह धन–धान्य से भी वंचित रह जाता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो अमावस्या अज्ञानान्धकार की अथवा कलियुग के अंतिम चरण की सूचिका है क्योंकि इस काल में सभी नर–नारी अज्ञानावृत्त होते हैं। दैत्य राजा बली वास्तव में 'माया' अथवा 'विकारों' का प्रतीक है क्योंकि माया बहुत बली है, इस पर विजय प्राप्त करना बहुत कठिन है और यही मनुष्य को दैत्य बना देती है। श्री लक्ष्मी और अन्य देवी– देवताओं को दैत्यराज बली की कैद में बतलाने का भाव यह है कि भारतवासी लोग, जोकि सतयुग और त्रेतायुग में देवी–देवता होते हैं अथवा श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के वंशज हैं, जन्म– मरण में आते–आते कलियुग के अंत में दैत्य अथवा आसुरी स्वभाव के हो जाते हैं अर्थात् महाबली (माया) के बंधन में बँध जाते हैं। तब परमात्मा जो कि वामन है, ज्योति बिन्दु रूप हैं, अवतरित होकर उन देवताओं को बली (माया) की कैद से छुड़ाते हैं। इसके लिए ज्ञान और योग की शिक्षा देकर नर–नारियों का आत्मा रूपी दीपक जगाते हैं। जब वे पुनः देवता बनकर सतयुगी सुखी सृष्टि (क्षीर सागर) में जाकर विश्राम करते हैं। उसी वृत्तांत की याद में लोग आज तक दीपक जलाते हैं और इस दिन श्री लक्ष्मी का भी आह्वान करते हैं परंतु वे दीपकों का आलौकिक अर्थ न जानने के कारण आत्मा रूपी दीपक नहीं जलाते और श्री लक्ष्मी के समान दिव्य गुणों को धारण नहीं करते, इसलिए भारत भूमि पर श्री लक्ष्मी का आवास नहीं हो पाता और यहां श्री नारायण का सुख–शांति सम्पन्न राज्य स्थापित नहीं होता।

आइये, इस बार दीपावली पर हम आत्म–ज्योति जगाकर संसार से अज्ञानान्धकार दूर करने का दृढ़ संकल्प ले ताकि भारत में पुनः श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का सुख–शान्ति सम्पन्न राज्य स्थापित हो सके।

❖❖❖

वर्ष के 365 दिन उत्सवों की धमक वाला हमारा देश भारतवर्ष हम भारतवासियों को इन पर्वों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ता है। हम सबको शारीरिक मानसिक ऊर्जा से भरपूर करता है! क्या? पूरे विश्व में ऐसा कोई देश है जो इतनी सारी विविधताओं के साथ विभिन्न संस्कृतियों के तालमेल का सुंदर देश है। हम दीप उत्सव के जरिए प्यार का, भाईचारे का, सहिष्णुता, समानता का संदेश पूरे विश्व में भेजते हैं यही कारण है कि आज पूरा विश्व दीपों की जगमगाहट से भरने लगा है।

दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता की उपयोगिता

: डॉ. शिवानी

हम प्रतिदिन कई बार स्पिरिट (Spirit) शब्द का प्रयोग करते हैं जैसा कि अमुक व्यक्ति में स्पिरिट बहुत है या अमुक में स्पिरिट है ही नहीं। यह स्पिरिट क्या चीज है? शरीर का कोई बाहरी–भीतरी अंग तो नहीं है, फिर क्या है? जब हम यह शब्द बोलते हैं तब हमारे मन में भाव यह बनता है कि अमुक व्यक्ति में शक्ति, उमंग, उत्साह, उत्प्रेरणा, कर्मठता आदि गुण बहुत है। वास्तव में वे सभी गुण आत्मा के गुण हैं। स्पिरिट का शाब्दिक अर्थ है आत्मा। आत्मा के मनन, चिन्तन और अध्ययन को ही कहते हैं अध्यात्म और अंग्रेजी में कहते हैं स्प्रिचुअलिटी (Sirituality) जिसका अर्थ है आत्मा के मूल गुणों को जानना, उनमें स्थित होना, उन मूल गुणों के साथ जीवन में व्यवहार करना और परमात्मा पिता में बुद्धि योग जोड़कर मूल गुणों को बढ़ाना आदि–आदि।

वसुधैव कुटुम्बकम्

हम सभी नारा लगाते हैं, वसुधैव कुटुम्बकम अर्थात् सारा विश्व एक परिवार है। हम सब मानवात्माएँ आपस में भाई–भाई हैं। आध्यात्मिकता भी हमें यही सिखाती है कि हम सबका पिता एक परमात्मा है और हम उनके बच्चे हैं, यह विश्व हमारा प्यारा परिवार है। इस मानव–परिवार में आपसी सहयोग होना चाहिए परंतु है नहीं, क्यों? कारण यही है कि आध्यात्मिकता के सूत्र नारों के रूप में, लिखितऔर प्रवचनों के रूप में तो बहुत है परंतु व्यवहार में उतरे हुए नहीं है। दैनिक जीवन को सुखी, शांत, समृद्ध, निरोगी, प्रसन्न बनाने के लिए इन सूत्रों को व्यवहार में उतारना बहुत जरूरी है।

छह के लिए पाँच हजार की कुर्बानी

मान लीजिए, एक व्यापारी है। उसे कहा जाता है, आप भी आध्यात्मिक ज्ञान सीखिए, थोड़ा समय निकालकर राजयोग का अभ्यास कीजिए तो उसको लगेगा, मैं किसलिए सीखें, कब सीखें और वह उत्तर दे सकता है कि मैं कोई सन्यासी थोड़े ही हूँ, मेरे पास फुर्सत नहीं है, मैं व्यापार करके अपने बच्चे पाल रहा हूँ और मुझे ये सब करने की जरूरत भी क्या है? परंतु उसे जरूरत है। वह आटे का व्यापारी है और आटे में मिलावट करता है। उसका आटा उसके गाँव के 5000 लोग प्रयोग में लाते हैं। इस व्यापार से वह घर के छह लोगों का पेट पालता है। छह लोगों को जीवन देने के लिए वह 5000 लोगों के

स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करता है। फिर कहता है मेरे लिए पहले मेरा परिवार है और बाकी सारी बातें बाद में है लेकिन सवाल यह है कि वे 5000 लोग उसके कुछ भी नहीं लगते क्या? 5000 लोगों को धीमे–धीमे रोग और अल्पायु की तरफ धकेलकर केवल छह लोगों को जीवन देना– यह तो बड़ा महंगा सौदा है। यह तो हमने एक छोटा उदाहरण लिया लेकिन व्यापार का क्षेत्र 5000 की बजाय 5 लाख, 5 करोड़ या उससे भी अधिक जनता हो सकती है और बात केवल आटे की नहीं है, दवा, मिठाई, कपड़ा... आदि कोई भी जीवनोपयोगी चीज हो सकती है। इस प्रकार का निंदनीय व्यापार करते हुए भी हम कहते हैं कि हमें आध्यात्मिकता अर्थात् मूल्यों की कोई जरूरत नहीं है।

आध्यात्मिकता हमें बताती है कि जैसे हमारे घर के छह लोग हैं वैसे ही गाँव के 5000 या विश्व के अन्य लोग भी हैं। उनके खून का रंग भी लाल है, वे भी स्वस्थ रहना चाहते हैं, वे भी भगवान के बच्चे हैं, तो हम इन छह के लिए इतने को हंसी–खुशी कुर्बान क्यों कर रहे हैं? फिर हम शिकायत करते हैं कि समाज में मूल्य नहीं है, ईमानदारी नहीं है, कोई सुरक्षित नहीं है। चोरी, हिंसा शोषण का बाजार गर्म है। कारण यही है कि आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को जीवन में धारण करने की दृढ़ता हम नहीं दिखाते। उनके अभाव में असुरक्षा, झूठ, अभिमान आदि दिनोंदिन फल–फूल रहे हैं।

शक्ति हाथ से निकल जाने पर क्या कर पाएँगे ?

केवल व्यापार नहीं, प्रशासन या अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा हो सकता है। मान लीजिए, पच्चीस वर्ष के एक सरकारी अधिकारी की तहसील मुख्यालय में नियुक्ति हुई है। उसका भी यही विचार है कि अभी तो मुझे मौज–मजे करने दो, बूढ़ा होकर आध्यात्मिक बन जाऊँगा। परंतु बुढ़ापे में उसके आध्यात्मिक ज्ञान लेने से किसी को भी फायदा होने वाला नहीं है। उस तहसील के कुछ गाँवों में बरसात के पानी से खेतों की खड़ी फसल बरबाद हो गई है। किसान बहुत परेशान है। कइयों पर कर्ज भी है। एक गरीब किसान दो बसें बदलकर तहसील मुख्यालयमें इस अधिकारी को इस स्थिति की जानकारी देने और प्रशासन में मदद मांगने आया है और चपरासी से अपनी बात अंदर पहुँचाने का निवेदन करता है। चपरासी कहता है, साहब तो व्यस्त हैं। किसान अन्दर झाँककर देखता है और पाता है कि बड़े–बड़े व्यापारी, धनाढय व्यक्ति उसे घेर कर बैठे हैं। कुछ खाना–पीना भी चल रहा है। कोई उसे किसी उद्घाटन के लिए, कोई पारिवारिक पार्टी में शामिल होने का निमंत्रण देने आया है। सुंदर–सुंदर सौगातों का लेन–देन हो रहा है। अंदर हँसी के ठहाके गूंज रहे हैं और बाहर किसान मन मसोसकर बैठा है। वह पुनः चपरासी को कहता है, मेरे लिए साहब से समय लेकर आओ ना। चपरासी के पूछने पर साहब कहता है, आज किसी कारखाने का उद्घाटन है, कल आ जाना। गरीब किसान अगले दिन पुनः दो बसें बदलकर आता है और देखता है कि साहब तो छुट्टी पर हैं। यह बताया भी नहीं, मैं छुट्टी पर जाऊँगा। तीसरे दिन दोपहर बाद जैसे–तैसे उसने किसान को समय दिया और जल्दबाजी में उसकी बात सुनकर ऊपरी आश्वासन दे दिया कि देखेंगे, स्थिति का जायजा लेकर मदद जरूर करेंगे। किसान तो लौट गया। इस अधिकारी ने अपने हर कार्यक्षेत्र में यही रवैया अपनाया। जरूरतमंदों को उपेक्षित किया, पार्टियां करता रहा पर किसी की मदद कर उसे संतुष्ट नहीं किया। अब सेवानिवृत्त होकर आध्यात्मिक बनने की कोशिश में प्रवचन सुनने लगा। उनमें वही सुना कि गरीब अमीर को समदृष्टि से देखना चाहिए, महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, अनपढ़, गरीबों की पहले मदद करनी चाहिए, किसी के धन–दौलत, सौगातों के प्रभाव में नहीं आना चाहिए और अपना कर्तव्य निष्पक्ष भाव से पूरा करना चाहिए। विचार कीजिए, अब इस प्रवचन को सुनकर वह व्यक्ति क्या करेगा? यह प्रवचन इसे कब सुनना चाहिए था? जब 25 साल की आयु में यह अपने पद पर आसीन हुआ था। जब गाँव के लोग दुःखी होकर इसकी शरण में आ रहे थे और इसमें मदद की कामना कर रहे थे तब सुनना चाहिए था। अब जब हाथ से शक्ति निकल गई, कुर्सी छूट गई, तब

प्रवचन सुनकर किनका भला कर पाएगा? जब शक्ति हाथ में थी तब यह सेवा क्यों नहीं की जब कार सड़क पर चल रही है तब तो उसकी डेन्टिंग– पेंटिंग का फायदा है। बिगड़ने पर जब वह स्थाई रूप से गैरेज में डाल दी गई तब उसकी साज–सज्जा का क्या लाभ?

व्यक्ति 21 वर्ष तक नाबालिग है और 60 के बाद वृद्ध अर्थात् सेवानिवृत्त है। तो सेवाकाल तो 21 से 60 वर्ष तक ही है। परंतु इस समय के लिए वह कहता है कि मैं तो बाल–बच्चे, घर– परिवार संभाल रहा हूँ पर बिना नैतिक– आध्यात्मिक मूल्यों के घर–परिवार सम्भलेगा कैसे?

मन दिखता नहीं, उसे संवारते नहीं

एक छोटा बच्चा कुछ दिन स्कूल जाने के बाद शरीर के सभी अंगों के नाम हिन्दी और अंग्रेजी में अच्छे से जान जाता है पर क्या वह जान पाता है कि उसकी आत्मा और मन कहाँ है? नहीं। क्यों? क्योंकि ना ही घर में अभिभावकों ने और ना ही स्कूल में अध्यापकों ने मन और आत्मा के बारे में समझाया। वे खुद भी इस बारे में अनभिज्ञ हैं। एक माँ, सुबह बच्चे के उठने पर उसका मुख, आँखें कई तरह के खुशबूदार साबुनों सेधोती हैं पर क्या मन को भी धोने की कोशिश करती हैं? नहीं। क्योंकि उसने स्वयं का मन भी कभी नहीं धोया। मन किसी को दिखता नहीं इसलिए कोई टोकता नहीं कि तुम्हारा मन गन्दा है।

हम केवल दिखने वाली चीजों को संवारते हैं। बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ, घर से बाहर जाने लगा तो माँ ने कहा, बेटा तुम्हारे बाल उलझे हुए हैं, बाल ठीक करके बाहर जा। कभी नहीं कहती कि तेरा मन उलझा हुआ है, इसे भी सुलझा ले।

चाहे वो गुस्से में बाहर निकले, अपशब्द उच्चारता हुआ बाहर निकले, अधीरता और चंचलता के साथ बाहर निकले, नफरत और बदले की भावनाओं के साथ बाहर निकले– इसकी कोई चिंता और संभाल नहीं। थोड़ा बड़ा होने पर बाल ठीक कराने लगा पर मन को ठीक करने वाले स्थानों का पता लगाया? नहीं। बालिग होते– होते उसकी ड्रेस सुन्दर, बाल सुन्दर, पढ़ाई की डिग्री... सबकुछ सुन्दर होता गया लेकिन मन का रूप–स्वरूप तनावग्रस्त, अवसादग्रस्त, क्रोध, लोभ, अहंकारग्रस्त होता गया। ऐसे उलझे हुए मन वाले नौजवान को किसी भी कार्यक्षेत्र में लगाएंगे तो वह क्या कर पाएगा? गृहस्थी की गाड़ी से जोड़ेंगे तो भी क्या करेगा?

❖❖❖

मन को दर्पण की संज्ञा दी गई है और यह समझाने की कोशिश है कि जिस प्रकार तुम अपना मुख दर्पण में देखकर उसे संवारते हैं हो क्योंकि वह चेहरे के दाग धब्बे तुम्हें दिखाता है तुम उसमें देखकर अपने चेहरे को चमकाते हो ठीक वैसे ही मन वह दर्पण है जो तुम्हें तुम्हारे कर्मों को, चरित्र को भले और बुरे कार्मों को दिखाता है पाप, पुण्य अंकित कर देता है। इस पर ध्यान देने की जरूरत है कोई इस संसार से छुप सकता है भाग सकता है पर मन से न छिपा सकता है और ना भाग सकता है। मन को आत्मा को स्वच्छ करने का अभ्यास हमारे अच्छे कर्म और हमारा सद्व्यवहार है जिसे अपनाना हमारे लिए अनिवार्य है।

बाल कथा

सोना तू मेरी है

❐ : पद्मा चौगांवकर

एक थी शेरनी, बड़ी फुर्तीली और तेज वैसे ही चंचल और सुन्दर उसके दो बच्चे थे, नाम थे उनके शेरा और बघेरा।

कुछ दिनों से वे बेहद नटखट हो गये थे शेरनी चिंतित थी, उसे तो शाम से ही शिकार पर जाना होता था, धुंधलाती शाम में वह शिकार पर निकल जाती, उसके पीछे गुफा में शेरा–बघेरा खूब शैतानी करते। लौटती तो देखती कभी यह मुंह फुलाये बैठा है तो कभी वह। शेरनी परेशान। बात–बात में झगड़ा और ऊधम–मस्ती ।

एक दिन शेरनी गुफा में लौटी तो शेरा–बघेरा ने देखा कि उसके मुँह में एक जिन्दा शिकार है कोमल–सा एक हिरण का बच्चा। बिना माँ का यह छौना मारे डर से अधमरा हो रहा था, उसे जीवित रखने के पीछे, उसने एक बात और भी सोची थी वह नन्हीं हिरनियां शेरा–बघेरा के साथ खेलेगी, तो वे शैतान उससे कुछ अच्छी बातें तो सीखेंगे।

भयभीत छोना दो चार दिनों में शेरनी माँ का प्यार पाकर स्वस्थ हो गया, उसका नाम उसने रखा – सोना।

कुछ ही दिनों में शेरा–बघेरा और सोना आपस में घुल–मिल गये, अब वे दोनों दौड़–भाग और कूदा–फांदी में सोना को भी शरीक करते। लेकिन जैसे–जैसे शेरा बड़े होने लगे, उनकी शैतानियां बढ़ती गईं दिनों–दिन।

अब वे आपस में खूब झगड़ते एक दूसरे को नोचते–काटते। सोना को उनकी शैतानियां तनिक न भाती। वह उन्हें कई बार समझाती, पर वे उसकी किसी बात पर ध्यान न देते, उल्टे उसे ही डाँट देते।

इधर शेरनी जब बूढ़ी और कमजोर होने लगी थी। वह शेरा–बघेरा से शिकार में मदद की बात करती, पर वे कहां सुनने वाले थे। आवारा और उदंड, वे दिन भर मस्ती मारते। माँ का लाया शिकार मजे से उड़ाते रहते, चिंता में डूबी शेरनी अब दुःखी रहने लगी थी, वह एक दिन परेशान होकर शेरा–बघेरा से कह बैठी –

बच्चों मैंने सोचा था, तुम दोनों मेरे बुढ़ापे का सहारा बनोगे, पर देखती हूँ कि अभी, अपने पैरों पर ही खड़े नहीं हुए।

बस इतना सुनना था कि शेरा क्रोध से गरजा। जैसे उसका भारी अपमान हुआ हो, और फौरन गुफा से बाहर चला गया, फिर बघेरा भी उठा और कभी न लौटने की बात कहकर बाहर निकल गया।

साथ ही, शाम शेरनी और सोना ने, शेरा–बघेरा का इंतजार किया.... पर वे नहीं लौटे..... तो नहीं लौटे...।

बस ममता की मारी शेरनी ने कुछ खाया न पिया। उसका शरीर शिथिल पड़ गया और दो ही दिन में वह एकदम बूढ़ी हो गई।

सोना से उसका दुःख देखा न जाता था, उसका भी चारा–पानी छूट सा गया, क्या करे क्या न करे समझ न पा रही थी। उसने भूखी–दुःखिया शेरनी के पास जाकर उसका माथा सहलाया और फिर अपनी गर्दन उसकी पीठ पर रख दी, उस कोमल स्पर्श में कितना प्यार था। शेरनी ने आज जाना कि सोना उसकी कितनी अपनी है। क्षण भर को वह भूल गई कि उसने सोना को जन्म नहीं दिया है।

एकाएक सोना बोल उठी.... माँ ..... माँ तू भूखी है। तेरा जी भी अच्छा नहीं मेरी बात मान माँ तू मुझे खा ले।

शिकार पर न जा सकी.... आज तेरा भोजन मैं बनूंगी।

यह सुनते ही शेरनी की बंद आँखों से आँसुओं की धार वह चली, उसने सोना को गले लगा लिया और रूंधे गले से बोली नहीं सोना नहीं, बस तू ही तो मेरी है अब।

❖❖❖

विचित्र चित्र

ईश्वर ने संसार बनाया और उसमें हर वह चीज शामिल की है जो इस सृष्टि को अनवरत् चलायमान रख सकते हैं। सौंदर्य का समावेश हुआ, वन पर्वत श्रृंखलाएं, नदी, तालाब, झरने, समुद्र, पशु, पक्षी, कीट, पतंग सब है। इन सबमें बुद्धि है और संवेदनाएं भी हैं परंतु वे इसे अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं मनुष्य इनमें बुद्धिमान सर्वश्रेष्ठ है जो बोलकर बता सकता है मन के भावों को। फर्क इतना है कि मानव सारी शक्तियों और गुणों के होते हुए भी मानवीय से अमानवीय व्यवहार कर बैठता है और अपनी अनुशासन हीनता का परिचय देता है, परंतु पशु होते हुए भी मूक प्राणी होते हुए भी पशु, पक्षी कभी अनुशासन हीनता व अपशुता का व्यवहार नहीं करते हैं संत तुलसीदास जी ने इस संसार को एक विचित्र चित्र कहा है।

सबक

❑ : पवित्रा अग्रवाल, हैदराबाद

नयना ने अपनी छोटी बहन से पूछा– 'मीनू आज अभी तक लता नहीं आई ? आए तो कहना पहले मेरा कमरा साफ कर देगी।' आज नयना अपनी आदत के अनुसार लता को लँगड़ी नहीं बोल पाई।

लता चौदह वर्ष की लड़की है, जो नयना के यहाँ झाड़ू–पोंछा और बर्तन माँजने का काम करती है। गाँव की है। बचपन में माँ–बाप ने उसे पोलियो की दवा नहीं दिलवाई थी। उसकी सजा उस बच्ची को भोगनी पड़ रही थी। तीन साल की उम्र में उसे पोलियो हो गया था। देखने में बहुत सुंदर है लेकिन लँगड़ा कर चलती है। सात क्लास तक पढ़ी भी है। क्लास में लड़कियाँ लँगड़ी कह कर उसका मजाक उड़ाती थीं। दु:खी होकर उसने स्कूल छोड़ दिया और अपनी माँ के साथ घरों पर काम करने लगी।

पता नहीं नयना मन ही मन उससे क्यों चिढ़ती है। नयना देखने में लता जितनी सुंदर नहीं है। जब भी कोई लता की तारीफ करता है तो नयना को लगता है कि उससे तुलना की जा रही है। शायद उससे चिढ़ने की भी यही वजह है। सामने तो नहीं किंतु लता के पीछे वह उसे लँगड़ी नाम से पुकारती है। माँ ने कई बार टोका है कि उसे नाम से पुकारे किंतु नयना नहीं मानती। एक दिन वह लता के पीछे–पीछे उसकी नकल उतारते हुए लँगड़ा कर चल रही थी। लता ने देख लिया। उसने कुछ कहा तो नहीं किंतु उसकी आँखों में आँसू आ गए थे। जिसे नयना की माँ ने देख लिया था। बाद में नयना को बहुत डाँटा था और चेतावनी दी थी कि आगे से उसे लँगड़ी कहा या नकल उतारी तो लता के सामने ही सजा दूँगी।

तब से वह माँ के सामने तो नहीं किंतु भाई–बहनों के सामने उसे लँगड़ी ही कहती है लेकिन आज नयना ने मीनू से अकेले में भी लता के लिए लँगड़ी शब्द इस्तेमाल न करके लता कहा था। यह परिवर्तन मीनू ने भी नोट किया था।

परसों घर के बगीचे में खेलते समय नयना का पैर मुड़ गया था। तब से वह लँगड़ा कर चल रही है। इसी वजह से वह दो दिन स्कूल भी नहीं गई थी। मीनू ने गौर किया है कि जब तक लता घर में रहती है नयना दीदी एक जगह बैठ कर पढ़ती रहती है। शायद लता के सामने लँगड़ा कर चलने में उसे शर्म आती है।

लता के आने पर मीनू ने धीरे से कहा– नयना दीदी वह लँगड़ी आ गई है... पहले आपका कमरा साफ करने को कह दूँ ?

खबरदार, उसे लँगड़ी कहा तो...

लेकिन दीदी आप तो रोज उसे लँगड़ी कहती हो। एक दिन मैंने कह दिया तो डाँट रही हो।

नयना की आँखों में अश्रु छलक आए– हाँ मीनू वह मेरी गलती थी शायद मुझे सबक सिखाने के लिए ही मेरे पैर में मोच आई है। उसका दु:ख अब मेरी समझ में आया है। अब ऐसी गलती मैं कभी नहीं करूँगी।

❖❖❖

प्रेरक प्रसंग

गाँधी जी के गुरू

❑ : चन्द्र प्रकाश जायसवाल

बंबई में मैं जब खादी कमीशन की सेवा में था तब गांधी जी के आचार विचार को जानने–समझने का सुअवसर मिला था जिस प्रकार दत्तत्रेय जी शिक्षा ग्रहण करने के लिये अपने चौबीस गुरू पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि आदि को बना शिक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार गाँधी जी ने भी अपने कई गुरू बनाये थे। तीन बंदरों की प्रतिमा जिसमें एक मुख बंद किए, दूसरा दोनों कान बंद किए और तीसरा दोनों आँख बंद किये जिसमें उन्होंने शिक्षा ग्रहण किया था कि बुरा नहीं कहना, बुरा नहीं सुनना तथा बुरा न देखना, का ज्ञान देने वाले गुरूओं के अलावा शिक्षा देने वाले जो अच्छे मिले उनसे सीखा भी और समझ से किया भी।

गाँधी जी से संबंधित एक घटना है जब वे आगा खां महल से छूट कर पूजा की एक पर्णकुटी में पहुंचे तब मनुबेन ने सोचा कि बापू की टूटी चप्पलों की मरम्मत करा ली जाए। बापू मिलने वालों में व्यस्त थे। मनुबेन बापू की चप्पलें सुधरवाने के लिये एक मोची की दुकान में ले गयी। थोड़ी देर में बापू को चप्पलों की जरूरत पड़ी। उन्होंने मनुबेन से पूछा चप्पलें कहां गई। उन्हें बता दिया चप्पलें मोची को दे आई। बापू ने पूछा कितने पैसे लगेंगे मनुबेन ने कहा दो आना लगेंगे। नाराज होकर बापू ने कहा ये पैसे तू कहां से देगी मनुबेन ने कहा चंदे के बहुत से पैसे हैं। बापू ने कहा न तो मैं कमाता हूं न ही तू कमाती है हमें हरिजनों का चंदा खर्च करने का कोई अधिकार नहीं है जा चप्पलें वापस ला। मनुबेन मोची के पास गयी और चप्पलें वापस मांगने लगी।

जब मोची दादा को पता चला कि चप्पलें तो गाँधी जी की हैं। तब उसने लौटाने से मना कर दिया जब गाँधी जी को पता चला तब मनु को कहा जा मोची दादा को साथ बुलवाकर आ मैं उनको अपना गुरू बनाकर सम्मान करूंगा। मनुबेन जब उन्हें लिवाकर आयी तो बापू ने

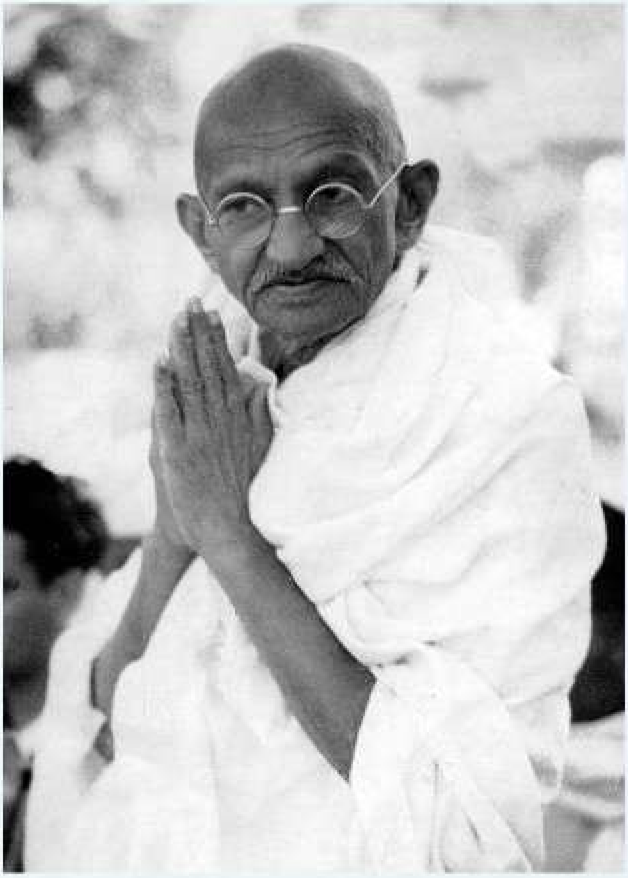

अपनी धुली चादर पर बैठा कर उचित सम्मान देकर मोची दादा से चप्पल सीना सीखा। इधर मोची दादा, गाँधी जी से सम्मान पाकर फूला न समाया। ऐसा अवसर उस के जीवन में पहली बार मिला। गांधी जी मोची दादा से चप्पल सीने की कला सीख कर गद्‌गद्‌ हो गये। उन्हें जीवन में एक गुरू सहज ही मिल गया। आगे चलकर बापू ने अवसर मिलने पर एक जोड़ी चप्पल बनाकर आश्रमवासियों को दिखाते हुए कहा कि गुरू से सीखने की कोई सीमा नहीं होती। यह शिक्षा सभी को गाँठ बाँध लेना चाहिए।

❖❖❖

अंतस की रसोई से..

उड़द दाल के लड्डू

❒ : डी. भारती राव

दीपावली के पर्व पर विविध व्यंजन भारतीयता की बहुआयामी सांस्कृतिक, समृद्धता को दर्शाते हैं। गुजिए, मठरी, सलोनी, सेव, अनारसा, बेसन के लड्डू, नारियल के लड्डू, बर्फी, गुलाबजामुन, मैदा से बनने वाले अनगिनत व्यंजन भारत के ही नहीं विश्व के हर उस हिस्से में बनते हैं जहां भारतीय निवास करते हैं। साल भर की खुशियां इन व्यंजनों में सिमटकर प्यार, सद्भावना और आत्मीयता मानो दिल से पेट तक पहुंचती हैं। आज इसी खुशी को दुगना करने के लिए एक और लड्डू बनाने की विधि सीखिए। बनाइये और मजा लीजिए।

सामग्री

चार कटोरी धुली उड़द दाल (कटोरी मीडियम)
1/2 कटोरी साधारण चावल
21/2से 3 कटोरी शक्कर (पिसी हुई)
शुद्ध गाय का घी (जो उपलब्ध हो)

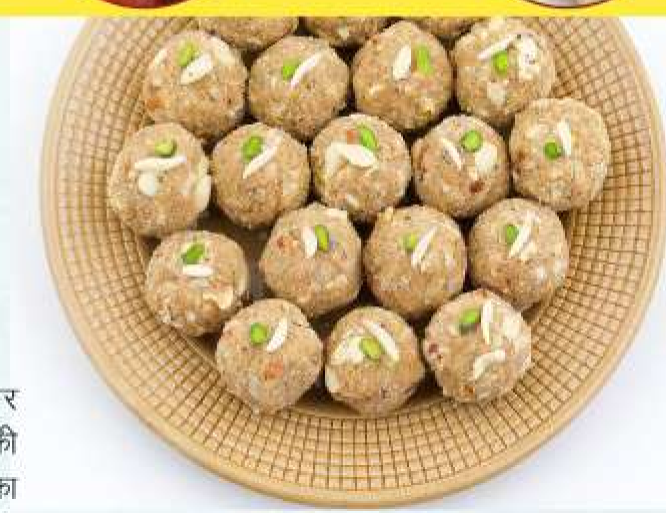

विधि

उड़द दाल को कढ़ाई में सूखा भून लें। धीमें आंच पर सेंकना है अच्छी तरह हल्के गुलाबी रंग होने तक दाल की खुशबू आने तक। फिर चावल को भी भून लें हल्का–हल्का फिर दोनों को मिलाकर मिक्सी में पीस लें। मैंदा को छलनी से साफ छानकर परात में इकट्ठा कर ले। शक्कर पीस लें मीठा के अनुसार अपनी रुचि के अनुसार शक्कर ले।

अब आटे में घी गर्म करके उसमें पिसी शक्कर डालें और तीनों को साथ मिलकर लड्डू बांध ले। लीजिए स्वादिष्ट खुशबूदार पौष्टिक लड्डू तैयार। जो लक्ष्मी जी को भी भोग लगे तो धन वर्षा हो। आप भी खाएं और लक्ष्मी जी को भी खिलाएं दीपावली के इस पर्व पर मीठा खाएं मीठा बने मीठा बोले मीठी मुस्कान के साथ एक नया व्यंजन बनाएं

❖❖❖

घरेलू नुस्खे

पेट की बहुत सारी खराबियों के कारण अधिकांश लोग परेशान रहते हैं। जैसे गैस एसिडिटी पाइल्स जैसे विकार बहुतायत से होते हैं। इन सबमें रामबाण उपाय है जिससे इन तकलीफों से हम शत–प्रतिशत बच सकते हैं घर में जमाई हुई दही को मलाई हटाकर छाछ बना लें और उसमें पिसी हुई अजवाइन व सेंधा नमक मिला लें और दिन में तीन बार इसे एक गिलास करके पिए। इससे 7 दिन तक नियमित लेते रहने पर लाभ होगा। छाछ जिसे तक्र भी कहते हैं अमृत है, जिससे पेट की तकलीफों में आराम मिलता है। छाछ एक लाभकारी पेय है और भारतीय रसोई में सहज उपलब्ध है। इसलिए यह एक कारगर घरेलू लाभकारी उपाय है।

शरीर में नस नाड़ियों में होने वाले दर्दों को दूर करने के लिए और हृदय फेफड़ो की मजबूती के लिए 250 ग्राम मेथी दाना, 100 ग्राम अजवाइन, 50 ग्राम दालचीनी और 50 ग्राम जीरा लेकर उनको अलग–अलग भून लें और मिक्सी में पीसकर छान लें, सारा मिश्रण अच्छी तरह मिलाकर शीशी में भर लें। प्रतिदिन रात्रि भोजन के एक से आधे घंटे बाद एक चम्मच पानी के साथ लेने पर लाभ होता है। इससे वजन भी कम होता है। वात पित्त की शिकायत भी दूर होती है।

सुबह चाय के बदले नारियल पानी में नींबू का रस निचोड़कर पानी पीने से शरीर की सारी गर्मी निकल जाती है और रक्त शुद्ध होता है। बच्चों में कृमि तथा उल्टी में भी यह नींबू युक्त पानी लाभकारी है। हृदय यकृत एवं गुर्दों के रोगों में यह लाभप्रद है। यह दवाइयों के विषैले असर को नष्ट कर देता है।

सेव का रस शहद में मिलाकर चेहरे पर दिन में दो–तीन बार लगाने पर चेहरे के कील मुहासे ठीक हो जाते हैं। मुंहासे का रगड़ कर बार–बार मुंह धोने पर मुहासे और बढ़ जाते हैं, क्योकि रगड़ त्वचा के रोमछिद्र तैलीय रिसाब करते हैं। जिनसे मुंहासों को ठीक होने में बाधा आती है। सेव का रस शहद का लेप दिन में तीन बार नियमित लगाने पर यह ठीक होने लगता है।

कड़ी पत्ता जिसे सब जानते हैं बहुतायत इसके पत्तों को दाल सब्जी में छोकने में उपयोग किया जाता है। मसालों, चटनी, अचार आदि में भी इसका उपयोग होता है वास्तव में कड़ी पत्ता का पौधा एक औषधीय पौधा है इसे घर में लगाना चाहिए। कड़ी पत्ते का प्रतिदिन खाली पेट चबाकर खाने से बाल झड़ना बंद हो जाते हैं, बाल घने और काले होते हैं। यह हृदय के लिए लाभदायक है इसके सेवन से चमत्कारिक परिणाम मिलते हैं। इसका केवल सब्जी, दाल, चटनी या मसालों के रूप में प्रतिदिन उपयोग करना चाहिए स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

❖❖❖

हास-परिहास

■ मरीज – डॉक्टर साहब मैं बहुत खुश रहता हूं नींद भी सुख से आती है जिंदगी में अमन ही अमन है। हर काम मन लगाकर करता हूं कोई परेशानी नहीं है ऐसा क्यों है?

डॉक्टर– मैं आपकी बीमारी समझ गया हूं आपकी जिंदगी में विटामिन 'She' की कमी है

■ पति– मेरी पत्नी गुम हो गई है

पोस्ट मास्टर– अंधे हो यह पोस्ट ऑफिस है पुलिस स्टेशन जाओ।

पति– माफ करें खुशी में समझ ही नहीं आ रहा किधर जाऊं।

■ मरीज– उम्र लंबी करने का कोई तरीका बताइए।

डॉक्टर– शादी कर लो।

मरीज– इससे उम्र लंबी हो जाएगी।

डॉक्टर– नहीं पर दो फायदे जरूर होंगे। लंबी जिंदगी की चाहत खत्म हो जाएगी और बची हुई जिंदगी लंबी लगने लगेगी।

■ पत्नी कुछ भी कहे तो – गर्दन को दो बार ऊपर से नीचे करें यह सर्वश्रेष्ठ योग है। यह योग न सिर्फ आपको बी.पी, अनिद्रा, बेचैनी, चिड़चिड़ापन इत्यादि रोगों से बचाता है बल्कि यह योग आपके खुशहाल जीवन की कुंजी है

नोटः गर्दन को कभी भी दाएं से बाएं ना घुमाए यह जानलेवा हो सकता है।

■ आजकल घर में बीवी भी हर बात पर GST बोलने लगी है। घर में किसी भी बहस, जो चल रही हो वह GST बोलकर बहस को खत्म कर देती है।

तंग आकर मैंने पूछ लिया– यह तुम हर बात करते–करते बीच में ही GST बोलकर चल देती हो ....क्या! मतलब है तुम्हारा?

और उसने जो जवाब दिया तो मैं सर पकड़ कर बैठ गया

G– गलती

S– सिर्फ

T– तुम्हारी है।

■ टीचर गोलू से– 5 में से 5 घटाने पर कितने बचेंगे!!!!!

गोलू– पता नहीं मैडम

टीचर– पांच भटूरे तुम्हारे पास है और अगर पांच भटूरे मैं ले लूं तो तुम्हारे पास क्या बचेगा??

गोलू– मैडम छोले!!!!!

■ भक्त– बाबा पढ़ा लिखा हूं पर नौकरी नहीं मिलती क्या करूं??

बाबा– कहां तक पढ़े हो.......?

भक्त– बाबा मैंने BA किया है।

बाबा एक बार और BA कर लो दो बार करने पर तुम बाबा बन जाओगे, तो तुम्हें नौकरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

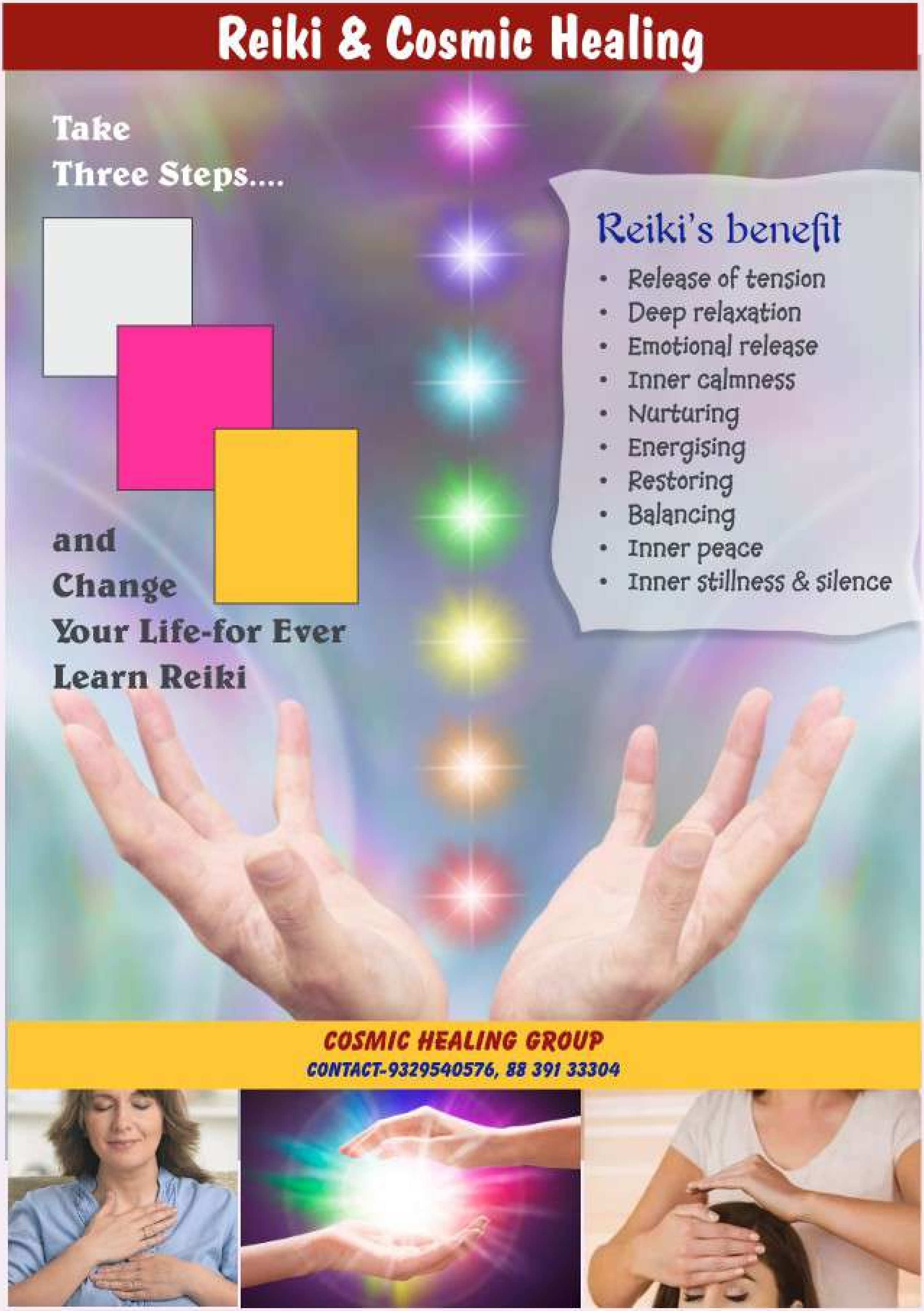
Reiki & Cosmic Healing
Take
Three Steps....
and
Change
Your Life-for Ever
Learn Reiki
Reiki's benefit
• Release of tension
• Deep relaxation
• Emotional release
• Inner calmness
• Nurturing
• Energising
• Restoring
• Balancing
• Inner peace
• Inner stillness & silence
COSMIC HEALING GROUP
CONTACT-9329540576, 88 391 33304

CHECK YOURPREMIUM.com
Discover
the perfect
Car Insurance
Get free quotes
Say "Hi" on 79997 36630
Check Your Premium Insurance Web Aggregator Pvt. Ltd. I ARN/BN /2023/108

HESITATE
TO START A
BUSINESS?
lookUPp
Be Business Ready
LET'S START
We will bring your business idea to life from market research to financial projections, we are here to guide you at every step
Call us at
88391 33304
Visit our website
www.lookupp.in